प्रकाशक-
भैरराज मुणोत-फलोदी (मारवाड)

प्रकाशक-
मूलचन्द किसनदास कापड़िया
'जैनविजय' प्रि० प्रेस-खपाटिया चकला सूरत।

विषयानुक्रमणिका ।

(१) शीघ्रबोध भाग २१ वां

(२) शीघ्रबोध भाग २४ वां

(६) शीघ्रबोध भाग २५ वां।

श्री देवगुप्तसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः

अथश्री

शीघ्र बोध भाग २१ वाँ

कल्याणपाद पारामं श्रुत गङ्ग हिमाचलम ।
विश्व त्रये शितारं च त वन्दे श्रीज्ञाननन्दनम् ॥१॥

थोकडा नम्बर १

सूत्रश्री भगवतीजी शतक २४ वां

(गमाधिकार)

वर्तमान अंग अपेक्षा भगवतीसूत्र महात्ववाला माना जाता है इसी माफीक भगवती सूत्रके इगतालीस शतकमें चौवीसवा गमानामका शतक महात्ववाला है। इस चौवीसवा शतकका अधि-कार सामान्य बुद्धिवालोंके लिये बडा ही दुर्गम्य है, तथापि इस कठिन अधिकारको थोकडारूपमें सरल और इतना सुगमतासे लिखेंगे कि पाठकगण स्वल्प परिश्रमद्वारा इस गंभिर रहस्यवाले सदन्यको सुख पूर्वक समझके अपनी आत्माका कल्याण कर सके, इस गमाधिकारके मौलिक आठ द्वार बतलाया जावेगा। यथा —

(१) गमाद्वार (२) [illegible]द्वार (३) स्थानद्वार (४ जीवद्वार (५) अगतिस्थानद्वार (६) भवद्वार (७) [illegible] (८) नाणत्त द्वार।

आठद्वारोंका विवरण।

(१) **गमाद्वार**=एक ही गति तथा जातिके अन्दर भवापेक्षा तथा कालापेक्ष गमनागमन करते है उसे गमा कहते है जिन्का नौ भेद है। जेसे मनुष्य, रत्नप्रभा, नरकके अंदर, गमनागमन करे तों भवापेक्षा जघन्य दोयभव उत्कृष्ट आठ भव करे और कालापेक्षा नव गमा होता है यथा—

(१) "ओघसे ओघ" ओघ कहते है। समुच्चयकों जिन्में जघन्य और उत्कृष्ट दोनों समावेश हो शकते है, भवापेक्ष जघन्य दोयभव (एक मनुष्यका दुसरा नरकका) कालापेक्षा प्रत्यक मास और दश हजार वर्ष और उत्कृष्ट आठ भव करने है कालापेक्षा च्यार कोड पूर्व और च्यार सागरोपम, यह प्रथम गमा हुवा।

(२) "ओघसे जघन्य" मनुष्यका जघन्य उत्कृष्ट काल और नरकका जघन्य काल जेसे दो भव करे तों जघन्य प्रत्यक मास और दश हजार वर्ष उत्कृष्ट आठ भव करे तों च्यारकोड पूर्व वर्ष और चालीस हजार वर्ष यह दुसरा गमा।

(३) "ओघसे उत्कृष्ट" जघन्य दो भव करे तों प्रत्यक मास और एक सागरोपम उत्कृष्ट च्यारकोड पूर्व और च्यार सागरोपम यह तीसरा गमा हुवा।

(४) "जघन्यसे ओघ" जघन्य दो भव करे तों प्रत्यक मास और दश हजार वर्ष उत्कृष्ट आठ भव करे तों च्यार प्रत्यक मास और च्यार सागरोपम यह चोथा गमा।

(५) "जघन्यसे जघन्य" ज० दो भव० प्रत्यकमास और दश हजार वर्ष उ० च्यार प्रत्यक मास और चालीस हजार

वर्ष यह पांचवा गमा हुवा ।

(६) " जघन्यसे उत्कृष्ट " ज० दो भव० प्रत्यक मास और एक सागरोपम उत्कृष्ट आठ भव करे तो च्यार प्रत्यक मास और च्यार सागरोपम यह छठा गमा हुवा ।

(७) " उत्कृष्टसे ओघ " ज० दो भव० कोडपू र्व और दश हजार वर्ष उ० च्यार कोड पूर्व च्यार सागरोपम यह सातवा गमा हुवा ।

(८) " उत्कृष्टसे जघन्य " ज० दो भव० पुर्वकोड और दश हजार उ० च्यार कोड पूर्व और चालीस हजार वर्ष यह आठवा गमा हुवा ।

(९) " उत्कृष्टसे उत्कृष्ट " ज० दोभव० कोड पूर्व और एक सागरोपम० उ० च्यार पूर्वकोड और च्यार सागरोपम यह नौवा गमा हुवा ।

कमसे कम प्रत्यक मासका और ज्यादा पूर्वकोडवाला मनुष्य रत्नप्रभा नरकमे जा सक्ता है वह नरकमे जघन्य दश हजार वर्ष उ० एक सागरोपम आयुष्य पाता है तथा मनुष्य और रत्नप्रभा नरकके लगेतार भव करें तो जघन्य दोय भव उत्कृष्ट आठ भव, जिस्मे च्यार मनुष्यका और च्यार नारकीका इसका नव गमा होता है। कालमान उपर नवगममें लिखा है। इसी माफीक सर्व स्थानपर समझना ।

(२) ऋद्धिद्वार-जेसे यहासे मनुष्य मरके नरक जाता है जिसपर २० द्वार बतलाया जाता है यथा ।

(१) **उत्पात**=जीव नरकादि गतिमें उत्पन्न होता है वहा कहासे जाता है जेसे रत्नप्रभा नरकमे जानेवाला, मनुष्य तीर्थंच हैं.

(२) परिमाण–एक समयमें कितने जीव. जा–के उत्पन्न होताहै ।

(३) संहनन–कितने संघयण वाला जाके ,,
(४) अवगहाना–कितनि अवगहान वाला. ,,
(५) संस्थान=कितना संस्थानवाला. ,,
(६) लेश्या=कितनी लेश्यावाला ,,
(७) द्रष्टी=कितनी द्रीष्टी वाला ,,
(८) ज्ञान–कितने ज्ञानाज्ञान वाला ,,
(९) योग–कितने योगवाला जीव ,,
(१०) उपयोग–कितने उपयोगवाला ,,
(११) संज्ञा–कितने सज्ञावाला ,,
(१२) कषाय–कितनि कषायवाला ,,
(१३) इन्द्रिय–कितनि इन्द्रियवाला ,,
(१४) समुग्घातवा–कितनी समु० वाला ,,
(१५) वेदना-कितनी वेदनावाला ,,
(१६) वेद–कितनी वेदवाला ,,
(१७) स्थिति–कितनि स्थितिवाला ,,
(१८) अध्यवशाया–केसे अध्यशायवाला ,,
(१९) अनुबन्ध=कितना अनुबन्धवाला ,,
(२०) संभद्दो–कितना भव और काल लागे ,,

प्रत्यक जातिका जीव प्रत्यक गति जातिमें उत्पन्न होता है वह यह २० बोलोंकि ऋद्धि साथमें ले जाता है। इस विषयमे कमसे कम लघु दंडकका जानकार आवश्य होना चाहिये ताके प्रत्यक बोलपर पूर्वोक्त २० बोल स्वयं लगा शके।

(३) **स्थानद्वार**–प्रत्येक जातिमें जीव उत्पन्न होता है वह कितने स्थानसे आता है वह सब स्थान कितने है वह बतलाते है।

७ सात नरकके सात स्थान	१ व्यान्तर देवोंका एक स्थान
१० दश भुवनपतियोंकि दश,,	१ ज्योतीषी देवोंका एक स्थान
५ पाच स्थावरके पांच स्थान	१२ बारह देवलोकोंका बारह स्थान
३ तीन वैकलेन्द्रियके तीन,,	१ नौग्रवैगका एक स्थान
१ तीर्यच पांचेन्द्रियके एक,,	१ च्यार अनुत्तर वैमानका एक,,
१ मनुष्यका एक स्थान ,,	१ सर्वार्थसिद्ध वैमानका एक,,

सर्व मीलके ४४ स्थान होता है।

(४) **जीवद्वार**–जीव अनन्ते है जिस्मे संसारी जीवोंके संक्षेपसे ५६३ भेद बतलाया है परन्तु यहापर सप्रयोग्य ४८ जीवोंको ग्रहन किया है यथा ४४ तीसरे द्वारमे जो स्थान बतलाये है इतनेही यहांपर जीव समझ लेना। सिवाय.–

१ असंज्ञी तीर्थच पाचेन्द्रिय। १ असंज्ञी मनुष्य चौदास्थानकिया। १ तीर्थच युगलीया (अकर्म भूमि) १ मनुष्य युगलीया (अकर्म भूमि)	एवं ४८ जीव है।

(५) **आगतिके** स्थानद्वार–पूर्वोक्त ४४ स्थानमें आ–के

(१) **उत्पात**=जीव नरकादि गतिमें उत्पन्न होता है वहा कहासे जाता है जेसे रत्नप्रभा नरकमे जानेवाला, मनुष्य तीर्यंच हैं.

(२) परिमाण–एक समयमें कितने जीव. जा–के उत्पन्न होताहै।

(३) संहनन–कितने संघयण वाला जाके ,,

(४) अवगहाना–कितनि अवगहान वाला. ,,

(५) संस्थान=कितना संस्थानवाला. ,,

(६) लेश्या=कितनी लेश्यावाला ,,

(७) द्रष्टी=कितनी द्रीष्टी वाला ,,

(८) ज्ञान–कितने ज्ञानाज्ञान वाला ,,

(९) योग–कितने योगवाला जीव ,,

(१०) उपयोग–कितने उपयोगवाला ,,

(११) संज्ञा–कितने संज्ञावाला ,,

(१२) कषाय–कितनि कषायवाला ,,

(१३) इन्द्रिय–कितनि इन्द्रियवाला ,,

(१४) समुग्वातवा–किननी समु० वाला ,,

(१५) वेदना-कितनी वेदनावाला ,,

(१६) वेद–कितनी वेदवाला ,,

(१७) स्थिति–कितनि स्थितिवाला ,,

(१८) अव्यवशाया–केसे अव्यशायवाला ,,

(१९) अनुबन्ध=कितना अनुबन्धवाला ,,

(२०) संभहो–कितना भव और काल लागे ,,

प्रत्यक जातिका जीव प्रत्यक गति जातिमें उत्पन्न होता है वह यह २० बोलोंकि ऋद्धि साथमें ले जाता है। इस विषयमें कमसे कम लघु दंडकका जानकार आवश्य होना चाहिये तांके प्रत्यक बोलपर पूर्वोक्त २० बोल स्वयं लगा शके।

(३) **स्थानद्वार**—प्रत्येक जातिमें जीव उत्पन्न होता है वह कितने स्थानसे आता है वह सब स्थान कितने है वह बतलाते है।

७	सात नरकके सात स्थान	१	व्यान्तर देवोंका एक स्थान
१०	दश भुवनपतियोंके दश,,	१	ज्योतीषी देवोंका एक स्थान
५	पांच स्थावरके पांच स्थान	१२	बारह देवलोकोंका बारह स्थान
३	तीन वैकलेन्द्रियके तीन,,	१	नौग्रवैगका एक स्थान
१	तीर्यंच पाचेन्द्रियके एक,,	१	च्यार अनुत्तर वैमानका एक,,
१	मनुष्यका एक स्थान ,,	१	सर्वार्थसिद्ध वैमानका एक,,

सर्व मीलके ४४ स्थान होता है।

(४) **जीवद्वार**—जीव अनन्ते है जिस्मे संसारी जीवोंके संक्षेपसे ५६३ भेद बतलाया है परन्तु यहापर सम्प्रयोग्य ४८ जीवोंको ग्रहन किया है यथा ४४ तीसरे द्वारमे जो स्थान बतलाये है इतनेही यहांपर जीव समझ लेना। सिवाय.—

१ असंज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रिय।
१ असंज्ञी मनुष्य चौदास्थानकिया।
१ तीर्यंच युगलीया (अकर्म भूमि)
१ मनुष्य युगलीया (अकर्म भूमि)

एवं ४८ जीव है।

(५) **आगतिके स्थानद्वार**—पूर्वोक्त ४४ स्थानमें आ

उत्पन्न होते है वह प्रत्यक स्थानके जीव कितने कितने स्थानसे आते है यथा—

१ रत्नप्रभा नरकमें संज्ञी मनुष्य, संज्ञी तीर्यंच, असंज्ञी तीर्यंच यह तीन स्थानसे आते है।

१२ शेष छे नरकमें संज्ञी मनुष्य, संज्ञी तीर्यंच यह दोय स्थानसे आके उत्पन्न होते हैं।

९९ दश भुवनपति एक व्यान्तर एवं ११ स्थानमें संज्ञी मनुष्य, संज्ञी तीर्यंच, असंज्ञी तीर्यंच. मनुष्य युगलीया, तीर्यंच युगलीया एवं पांच पांच स्थानसे आके उत्पन्न होते है।

७८ पृथ्वी पाणी वनास्पति एवं तीन स्थानमें चौवीस दंडक और असंज्ञी मनुष्य असंज्ञी तीर्यंच एवं छवीस स्थानोसे आते है। यद्यपि चौवीस दंडकके बाहार संसारी जीव नही है परन्तु प्रथम सप्रयोजन मनुष्य तीर्यंचके दडकमें संज्ञी जीवोंको गृहन कर यह असंज्ञीकों अलग गीना है।

६० तेउ वायु तीन वैकलेन्द्रि एवं पांच स्थानमें पांच स्थावर तीन वेकलेन्द्रिय संज्ञी मनुष्य, तीर्यंच, असंज्ञी मनुष्य, तीर्यंच, एवं बारह बारह स्थानोंसे आके उत्पन्न होता हैं ५-१२=६०

३९ तीर्यंच पांचेन्द्रियमें. सातनरक. दशभुवनपति, व्यन्तर जोतिषी. आठदेवलोक. पांचस्थावर, तीनवैकलेन्द्रिय. संज्ञीमनुष्य. तीर्यंच असंज्ञी मनुष्य. तीर्यंच एवं ३९ स्थानसे आ-के उत्पन्न होता है।

४३ मनुष्यमें छे नारकी, दश भुवनपति, एक व्यन्तर जोतीषी, बारहादेवलोक, एकनौग्रीवैग, एकच्यारानुत्तरवैमान, एव

सर्वार्थ सिद्ध वैमान, पृथ्वी पाणी वनास्पति तीन वैकलेन्द्रिय संज्ञी मनुष्य, तीर्यंच, असंज्ञी मनुष्य. तीर्यंच एवं ४२ स्थानोंसे आके उत्पन्न होता है।

१२ जोतीषी. सौधर्म. इशान एवं तीन स्थानोंमें. संज्ञी मनुष्य. तीर्यच. मनुष्य युगलीया, तीर्यंच युगलीया. एवं चार चार स्थानसे आते है।

१२ तीजा देवलोकसे आठ वा देवलोक तकके छे स्थानमें संज्ञी मनुष्य संज्ञी तीर्यंच एवं दो दो स्थानसे आते है।

७ च्यार देवलोक (९–१०–११–१२ वां) एक नौग्रीवैगका, एक च्यारानुत्तर वैमानका, एकसर्वार्थसिद्ध वैमानका एव ७ स्थानमें एक संज्ञी मनुष्यका ही आयके उत्पन्न होता है।

एवं सर्व मीलाके ३११ स्थान हुवे इति।

(६) **भवद्वार**–कोनसा जीव कितने स्थानमें जाते है वह यहासे कितनि स्थिति वाला जाते है वहापर कितनि स्थिति पाते है तथा जाने अपेक्षा और आने अपेक्षा कितने कितने भव करते है।

(१) असंज्ञी तीर्यंच पाचेंद्रिय मरके वैक्रय शरीर धारक बारह स्थान, पेहली नरक, दश भुवनपति, व्यंतरमें जाते है। यहांसे जघन्य अन्तर मुहर्त, उत्कृष्ट कोड पूर्व वाला जाता है वहापर जघन्य १००००) वर्ष उ० पल्योपमके असंख्यातमे भाग कि स्थितिमें जाते है, भव जघन्य तथा उत्कृष्ट दोय भव करते है. यहासे असंज्ञी मरके जाता है वह एक भव, वहांपर भी एक भव करते है। एवं १२ स्थानवाला पीछा असंज्ञी तीर्यंच पाचेंद्रियमें

सर्वार्थ सिद्ध वैमान, पृथ्वी पाणी वनास्पति तीन वैकलेन्द्रिय संज्ञी मनुष्य, तीर्यंच, असंज्ञी मनुष्य, तीर्यंच एवं ४१ स्थानोंसे आके उत्पन्न होता है।

१२ जोतीषी. सौधर्म. इशान एवं तीन स्थानोंमें. संज्ञी मनुष्य. तीर्यंच. मनुष्य युगलीया, तीर्यंच युगलीया. एवं चार चार स्थानसे आते है।

१२ तीजा देवलोकसे आठ वा देवलोक तकके छे स्थानमें सज्ञी मनुष्य संज्ञी तीर्यंच एवं दो दो स्थानसे आते है।

७ च्यार देवलोक (९-१०-११-१२ वां) एक नौग्रीवेगका, एक च्यारानुत्तर वैमानका, एकसर्वार्थसिद्ध वैमानका एव ७ स्थानमें एक संज्ञी मनुष्यका ही आयके उत्पन्न होता है।

एवं सर्व मीलाके २११ स्थान हुवे इति।

(६) **भवद्वार**—कोनसा जीव कितने स्थानमें जाते है वह यहांसे कितनि स्थिति वाला जाते है वहांपर कितनि स्थिति पाते है तथा जाने अपेक्षा और आने अपेक्षा कितने कितने भव करते है।

(१) असज्ञी तीर्यंच पांचेद्रिय मरके वैक्रय शरीर धारक बारह स्थान, पेहली नरक, दश भुवनपति, व्यंतरमें जाते है। यहांसे जघन्य अन्तर मुहूर्त, उत्कृष्ट क्रोड पूर्व वाला जाता हे वहापर जघन्य १००००) वर्ष उ० पल्योपमके असंख्यातमें भाग कि स्थितिमें जाते है, भव जघन्य तथा उत्कृष्ट दोय भव करते है. यहासे असंज्ञी मरके जाता है वह एक भव, वहापर भी एक भव करते है। उक्त १२ स्थानवाला पीच्छा असंज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रियमें

नहीं आता है, वास्ते दोय ही भव करता है। शेष नौ गमा और बीसद्वार ऋद्धिका पहला दुसरा द्वारसे स्वमति लगा लेना चाहिये।

(२) संज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रिय मरके वैक्रय शरीर धारी २७ स्थानमें जावे—यथा सात नरक, दश भुवनपति, व्यंतर, ज्योतीषी पहलासे आठवा देवलोक तक, यहांसे जघन्य अंतर महुर्त उ० कोड पूर्व, वहांपर अपने अपने स्थानकि जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति पावे भवापेक्षा २६ स्थानमें जघन्य २ भव उ० ८ भवसो. दोयभव, एक यहांका एक वहांका, उत्कृष्टआठ च्यार यहांका च्यार वहांका, सातवी नरकमें जानेकि अपेक्षा छे गमामें (तीजो छठो नौमो वर्जके) ज० तीनभव उ० सात भव करे । अने कि अपेक्षा ज० दोय उ० छे भव करे और तीन गमा पेक्षा जानेमें ज० २ भव उ० ५ भव, आनापेक्षा जघन्य दोय भव उ० च्यार भव करे। भावार्थ:—

सतावी नरककि उत्कृष्ट स्थिति ३३ सागरोपमका भव करे तो दोय भवसे अधिक न करे। और जघन्य बावीस सागरोपमके भव करे तो तीन भवसे अधिक नही करे वास्ते ३—७+२—६+३ ५+२—४ भव कहा है।

(३) मनुष्य मरके, पहली नरक, दश भुवनपति व्यन्तर ज्योतीषी, सौधर्म, ईशान देवलोक एवं १५ स्थानमें जावे, यहांसे जघन्य प्रत्यक मास और उत्कृष्ट कोड पूर्व कि स्थितिवाला जावे वहांपर अपने अपने स्थान कि जघन्योत्कृष्ट स्थिति पावे। भव जघन्य दोय उत्कृष्ट आठ करे।

(४) मनुष्य मरके शार्करप्रभादि छे नरक, तीसरासे बाहरवा देवलोकतक दश देवलोक, एक नौग्रैवेग, एक च्यारानुत्तर वैमान. एक सर्वार्थसिद्ध वैमान एवं १९ स्थानमें जावे यहासे स्थिति जघन्य प्रत्यक वर्ष कि उ० कोड पूर्व कि,वहांपर जघन्योत्कृष्ट अपने अपने स्थान माफीक समझना। भवापेक्षा पाच नरक(२–३–४–५–६ ठी) और छे देवलोक (३–४–५–६–७–८ वां)में ज० २ भव उ० आठ भव करे। सातवी नरकका जघन्योत्कृष्ट दोय भव कारण सातवी नरकसे निकलके मनुष्य नही होवे। च्यार देवलोक (९–१०–११–१२ वा) और नौग्रैवेगमें ज० तीन भव उ० सातभव, च्यारानुत्तरवैमानमें ज० तीन भव उ० पांच भव सर्वार्थसिद्ध वैमानमें जाने. अपेक्षा तीन भव आने अपेक्षा दो भव करे।

(५) दश भुवनपति, व्यन्तर, ज्योतीषि, सौधर्म इशान देवलोकके देवता मरके, पृथ्वी पाणी वनस्पतिमें जावे, यहांसे स्थिति ज० उ० अपने २ स्थानसे समझना। वहा पर भी अपने अपने स्थान माफीक भवापेक्षा ज० दोय भव उत्कृष्टेभि दोय भव करे। कारण पृथ्व्यादिसे निकलके देवता नही होते हैं।

(६) मनुष्य युगल और तीर्यच युगल मरके, दशभुवनपति, व्यन्तर, ज्योतीषी, सौधर्म, इशान, एव १४ स्थानमें उत्पन्न होते है, यहासे स्थिति जघन्य साधिक कोड पूर्व उ० तीन पल्योपम, वहापर ज० दशहजार वर्ष उ० असुर कुमारमें तीन पल्योपम, नागादि नव कुमारमें देशोनी दोयपलोपम, व्यन्तरमें एक पल्योपम ज्योतीषीमें जावे तो यहासे ज० पल्योपमके आठमा भाग उ०

तीन पल्योपम, वहांपर ज० पल्योपमके आठमे भाग, उ० एक पल्योपम लक्षवर्ष साधिक, सौधर्म देवलोकमें जावे तों यहांसे ज० एक पल्योपम और इशान देव लोकमें साधिक एक पल्योपम उ० तीन पल्योपमवाला जावे वहां पर भी ज० उ० इसी माफीक स्थिति पावे। भवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट दोय भव करे। भावार्थ युगलीया कि जीतनी स्थिति हो उससे अधिक स्थिति देवलोकमें नहीं मीलती है और देवतोंसे पीच्छा युगलीया नहीं होते है वास्ते दोय भव करते है।

(७) पांच स्थावर मरके पांच स्थावरमें जावे स्थिति यहांसे तथा वहांपर अपने अपने स्थान माफीक पावे। भव च्यार स्थावरमें जावे तो ज० दोय भव। उ० असंख्याते भव करे। काल ज० दोय अन्तर महुर्त उ० असंख्यत काल। पांचे स्थावर वनास्पतिमें जावे तो ज० दोय भव।

उ० अनन्ते भव करे। काल ज० दोय अन्तर महुर्त उ० अनन्तो काल लागे। एवं आने अपेक्षा भी समझना।

(८) पांच स्थावर मरके तीन वैकलेन्द्रियमें जावे तो भव ज० दोय भव उ० संख्याते भव करे। काल ज० दोय अन्तर महुर्त उ० संख्यातो काल लागे। स्थिति यहांसे तथा वहांपर स्व स्व स्थानकि समझना। एवं आने अपेक्षा।

(९) पांच स्थावर मरके तीर्यंच पांचेन्द्रिय तथा मनुष्यमें जावे। स्थिति स्व स्व स्थान प्रमाणे। भव ज० दोय उ० आठ भव करे। एवं आने अपेक्षा। काल ज० दोय अन्तर महुर्त उ० दोनों स्थानकि उत्कृष्ट स्थितिसे भिन्न भिन्न उपयोगसे कहना।

(१०) तीन वैकलेन्द्रिय मरके पांच स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय तीर्यंच पांचेन्द्रिय और मनुष्यमें जावे। स्थिति यहांकि तथा वहाकि स्व स्व स्थान माफीक। भव च्यार स्थावरमें। असंख्याते तीन वैकलेन्द्रियमें संख्याते। वनास्पतिमें अनन्ते। तीर्यंच पांचेन्द्रिय तथा मनुष्यमें आठ भव और जघन्य सब स्थान पर दोय भव समझना। काल स्वस्व स्थानकि जघन्य उत्कृष्ट स्थिति प्रमाणे समझना।

(११) तीर्यंच पाचेन्द्रिय मरके दश स्थान=पांच स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय तीर्यच पाचेन्द्रिय और मनुष्यमें जावे स्थिति पूर्ववत् भव ज० दोय उत्कृष्ट आठ भव करे काल पूर्ववत् निजोपयोगसे समझना।

(१२) मनुष्य मरके, तीनस्थावर, तीनवैकलेन्द्रिय, तीर्यंच पाचेन्द्रिय, मनुष्य एवं आठ स्थानमे जावे। स्थिति पूर्ववत् भव ज० दोय उ० आठ भव करे।

(१) मनुष्य मरके तेउकाय वायुकायमे जावे स्थिति पूर्ववत भव ज० उ० दोय भव करे। कारण तेउ वायु मरके मनुष्य न होवे।

नोट–ऊपर वैकलेन्द्रियमें उत्कृष्ट संख्यातेभव च्यार स्थावरमें असख्याते और वनस्पतिमें अनन्ते भव जो कहा है वह पहला दुसरा चोथा पांचवा यह च्यार गमाकि अपेक्षा है शेष ३–६–७–८–९ इस पाच गमामें जघन्य दोय भव उ० आठ भव करते है।

(७) **गमा संख्याद्वार**–प्रथम द्वारमें नौ गमा बतल
है, कोनसा जीव मरके कितने स्थानमें जाते है, मृत्युस्थान अ
उत्पन्न स्थानमें कितने भवतक गमनागमन करते है उस्मे कित
काल लगता है, जिस्का अलग अलग कितना गमा होते है
इस सातवा द्वारसे बतलाया जावेगा।

जघन्य दोय भव और उत्कृष्ट दोय भवके ग

७७४। जघन्य उत्कृष्ट दोय भवके स्थान कितने है।

१२ असंज्ञी तीर्यच पहली नरक, दशभुवनपति, व्यन
इस १२ स्थान जाते है वहा जघन्योत्कृष्ट दोय भव करते है।

२८ मनुष्य युगल, दश भुवनपति व्यन्तर ज्योतीषी सौधर्म
इशान देवतावोंमें जाते है वहा ज० उ० दोय भव करते है।
इसी माफीक तीर्यंच युगलीया भी समझना दोनोंका अठावीस स्थान।

४२ दश भुवनपसि, व्यन्तर, ज्योतीषी, सौधर्म, इशान
यह चौद स्थानके जीव मरके पृथ्वी, पाणी, वनास्पतिमें जाते है
वहां ज० उ० दोय भव करते हैं चौदाकों तीन गुणे करनेसे ४२
होता है।

३ मनुष्य मरके, तेउकाय, वायुकायमें जाते है वहां ज०
उ० दोय भव करते है तथा मनुष्य सातवी नरकमें भी ज० उ०
दोय भव करते है एवं तीन स्थान।

एवं ८५ स्थान हुवे। प्रत्यक स्थानके नौ नौ गमा करनेसे
७६५ तथा सर्वार्थसिद्ध वेमानसे आने अपेक्षा दोय भव करते
है जिस्का तीन गमा कारण वहॉ स्थिति उत्कृष्ट होती है
(७–८–९ गमा) और असंज्ञी मनुष्य मरके तेउ कायमें तथा

वायु कायमें जाते है वहां भी दोय भव करते है परन्तु असंज्ञी मनुष्यकि जघन्य स्थिति होनेसे गमा (४—५—६) तीन तीन ही होता है ७६५—३—६ सर्व मीलाके ७७४ गमा होता है।

जघन्य दोयभव उत्कृष्ट आठ भवके गमा १६४६ होते है इसके स्थानोंका विवरण, यथा –

२६ संज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रिय मरके सतावीस स्थान जाते है जिस्मे एक सातवी नरक वर्जके शेष २६ स्थान।

१५ मनुष्य मरके १५ स्थान जावे देखो छठा द्वारसे।

११ मनुष्य मरके १९ स्थानमें जावे जिस्में १-२ ४-५-६ ठो नरक तथा ३—४—५—६—७—८ वा देवलोक एव ११ स्थान जावे।

एवं ५२ स्थान जाने अपेक्षा और ५२ स्थान पीच्छा आने अपेक्षा सर्व १०४ स्थानमें ज० दोय भव उ० आठ भव करे प्रत्यक स्थानपर नौ नौ गमा होनेसे ९३६ गमा हूवे।

पृथ्वीकाय मरके पृथ्वीकायमें जावे जिस्में पाच गमामें ज० दोय भव उ० आठ भव करते है एवं शेष च्यार स्थावर तीन वैकलेन्द्रियका पाच पांच गमा गीननेसे ४० गमा होते है। संज्ञी मनुष्य संज्ञी तीर्यंच असंज्ञी तीर्यंच मरके पृथ्वीकायमें जावे वहा ज० दोय उ० आठभव जिस्के नौ नौ गमा और असंज्ञी मनुष्य पृथ्वीकायमें जावे भव ज० दोय उ० आठ करे परन्तु जघन्य स्थिति होनेसे तीन गमा (४—५—६) होता है एवं ३० गमा तथा ४० पेहलाके एवं ७० गमा पृथ्वीकायके हुवे इसी माफीक

शेष च्यार स्थावर तीन वैकलेन्द्रियके गुननेसे ९६० गमा होता है परन्तु संज्ञो मनुष्य असंज्ञी मनुष्य मरके तेउ कायमें जावे जीसका ९–३ वारहा गमा ज० उ० दोयभवमें गीना गया है वास्ते तेउ कायका १२ वायुकायके १२ एवं २४ गमा यहां पर बाद करनेसे ९३६ गमा शेष रहते है।

पाच स्थावर तीन वेकलेन्द्रिय मरके तीर्यंच पांचेन्द्रियमें जावे जिस्के प्रत्यकके नौ नौ गमा होनेसे ७२ गमा हुवा। संज्ञो मनुष्य संज्ञी तीर्यंच, असंज्ञीतीर्यंच मरके तीर्यंच पांचेन्द्रियमें जावे जिस्का सात सात गमासे २१ तथा असंज्ञी मनुष्यके तीन मीलाके २४ गमा हुवा, पूर्वके ७२ मीलानेसे ९६ गया।

एवं मनुष्यके भी ९६ गमा होता है परन्तु तेउकाय वायु काय मरके मनुष्यमें नहीं आवे वास्ते उन्होंका १८ गमा बाद करनेसे ७८ गमा होते है।

एवं ९३६–५३६–९६–७८ सर्व मिलके १६४६ गमों अन्दर जघन्य दोभव उत्कृष्ट आठ भव करते है।

जघन्य दोय भव उ० संख्याते असंख्याते अनन्ते भवके गमा २९६ होते है जिसके विवरण।

पांच स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय मरके पृथ्वी कायमें जाने है तब १–२–४–५ वा इस च्यार गमामें वैकलेन्द्रियसे सख्याते च्यार स्थावरसे असंख्याते, बनास्पतिसे अनन्ते भव करने है आठों वोलसे ३२ गमा एक पृथ्वीकायके स्थानका होता है इसी माफक पांच स्थावर तीन वैकालेन्द्रिका भी लाके २५६ गमा हुवा।

ज० ३ उ० ७ भवके गमा १०२। च्यार वैमान तथा सातवी नरक एवं ५ स्थानके नौ नौ गमा होनेसे ४५ और तीर्थंच सातवी नरक (२७ स्थानसे २६ पूर्व गीना) जावे उसका ६ गमा एवं ५१ जाने अपेक्षा और ५१ गमा भी आनेकि अपेक्षा एवं १०२ गमा हुवा।

ज० ३ भव उ० ५ भव तथा ज० २ भव उ० ४ भवके गमा २७ है यथा च्यारानुत्तर वैमान मे जानेका ९ गमा तीर्यंच सातवी नरक जानेका ३ एवं १२ तथा पीच्छा आनेका १२ एवं २४ और सर्वार्थसिद्ध वैमनका ३ गमा एवं सर्व २७ गमा हुवा।

सर्व ७७४-१६४६-२५६-१०२-२७ कुल २८०५ गमा हुवे। और ८४ गमा तुटते है जिन्का विवरण इस मुजब है।

६० असंज्ञी मनुष्य पांच स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय तीर्यंच पांचेन्द्रिय, और मनुष्य इस १० स्थानपर असंज्ञी मनुष्य कि जघन्य स्थिथि होनेसे ४-५-६ यह तीन तीन गमा गीना जानेसे शेष छे छे गमा तुटा दश स्थानके ६० गमा होता है।

१२ सर्वार्थ सिद्ध वैमानके देवतोंकि उत्कृष्ट स्थिति होनेसे आते जानेके तीन तीन गमा गीना गया है वास्ते छे छे गमा तुटा एवं १२ गमा हुवा।

१२ ज्योतीषी सौधर्म इशान इन तीन स्थानमें मनुष्य युगलीया तथा तीर्यंच युगलीया जानेकि अपेक्षा सात सात गमा गीना गया है वास्ते दो दो गमा तुटनेसे तीन स्थानके ६ गमा मनुष्यका, छे गमा तीर्यंचका, एवं बारह गमा तुटा ६०-१२-१२

शेष च्यार स्थावर तीन वैकलेन्द्रियके गुननेसे ९६० गमा होत
है परन्तु संज्ञो मनुष्य असंज्ञी मनुष्य मरके तेउ कायमें जावे जीसक
९–३ बारहा गमा ज० उ० दोयभवमें गीना गया है वास्ते ते
कायका १२ वायुकायके १२ एवं २४ गमा यहां पर बाद करने
९३६ गमा शेष रहते है।

पाच स्थावर तीन वेकलेन्द्रिय मरके तीर्यंच पांचेन्द्रियां
जावे जिस्के प्रत्यकके नौ नौ गमा होनेसे ७२ गमा हुवा। संज्ञ
मनुष्य संज्ञी तीर्यंच, असंज्ञीतीर्यंच मरके तीर्यंच पांचेन्द्रियां
जावे जिस्का सात सात गमासे २१ तथा असंज्ञी मनुष्यके ती
मीलाके २४ गमा हुवा, पूर्वके ७२ मीलानेसे ९६ गया।

एवं मनुष्यके भी ९६ गमा होता है परन्तु तेउकाय वायु
काय मरके मनुष्यमें नहीं आवे वास्ते उन्होंका १८ गमा बा
करनेसे ७८ गमा होते है।

एवं ९३६–९३६–९६–७८ सर्व मिलके ११४६ गमों
अन्दर जघन्य दोभव उत्कृष्ट आठ भव करते है।

जघन्य दोय भव उ० संख्याते असंख्याते अनन्ते भवके गम
२९६ होते है जिसके विवरण।

पांच स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय मरके पृथ्वी कायमें जाते
तब १–२–४–५ वा इस च्यार गमामें वैकलेन्द्रियसे संख्या
च्यार स्थावरसे असंख्याते, बनास्पतिसे अनन्ते भव करते
आठों बोलसे ३२ गमा एक पृथ्वीकायके स्थानका होता
इसी माफक पांच स्थावर तीन वैकालेन्द्रिका भी लाके २९
गमा हुवा।

ज० १ उ० ७ भवके गमा १०२। च्यार वैमान तथा सातवी नरक एवं ९ स्थानके नौ नौ गमा होनेसे ८१ और तीर्यंच सातवी नरक (२७ स्थानसे २६ पूर्व गीना) जाने उसका ६ गमा एवं ९१ जाने अपेक्षा और ९१ गमा भी आनेकि अपेक्षा एवं १०२ गमा हुवा।

ज० १ भव उ० ५ भव तथा ज० २ भव उ० ४ भवके गमा २७ है यथा च्यारानुत्तर वेमान मे जानेका ९ गमा तीर्यंच सातवी नरक जानेका ३ एवं १२ तथा पीच्छा आनेका १२ एवं २४ और सर्वार्थसिद्ध वैमनका ३ गमा एवं सर्व २७ गमा हुवा।

सर्व ७७४-१६४६-२५६-१०२-२७ कुल २८०५ गमा हुवे। और ८४ गमा तुटते है जिन्का विवरण इस मुजब है।

६० असंज्ञी मनुष्य पाच स्थावर तीन वेकलेन्द्रिय तीर्यंच पाचेन्द्रिय, और मनुष्य इस १० स्थानपर असंज्ञी मनुष्य कि जघन्य स्थिथि होनेसे ४-५-६ यह तीन तीन गमा गीना जानेसे शेष छे छे गमा तुटा दश स्थानके ६० गमा होता है।

१२ सर्वार्थ सिद्ध वैमानके देवतोंकि उत्कृष्ट स्थिति होनेसे आते जानेके तीन तीन गमा गीना गया है वास्ते छे छे गमा तुटा एवं १२ गमा हुवा।

१२ ज्योतीषी सौधर्म इशान इस तीन स्थानमें मनुष्य युगलीया तथा तीर्यंच युगलीया जानेकि अपेक्षा सात सात गमा गीना गया है वास्ते दो दो गमा टुटनेसे तीन स्थानके ६ गमा मनुष्यका, छे गमा तीर्यंचका, एवं बारह गमा टुटा ६०-१२-१

वं कुल ८४ गमा हुवे वह पूर्वेलोंके साथ मीला देनेसे मां
ीलके २८०१-८४-२८८९ गमा हुवे इति ।

२८८९, गमा हुवे है इसपर जो दुसरेद्वारमें ऋद्धि
ीसद्वार प्रत्यक बोलमें लगानेसे कीस कीस बोलमें तरतम
होती है उस्कों शास्त्रकारोंने ' नाणन्त कहा है ।

(८) **नाणन्ताद्वार**-सामान्य प्रकारे एक जीव मरके कीस
ी स्थानमें जाता है उसके नौ गमा होता है जब प्रथम गम
र दुसरेद्वारके वीसद्वारोंकि ऋद्धि लगाई जाती है शेष आ
ामा रहेते है, तों प्रथम गमाकी ऋद्धिमें और शेष आठ गमां
्या तरतम है वह इस नाणन्ता द्वारसे वतलावेगा ।

(१) असंज्ञी तीर्यच मरके बारह स्थानमें जाता है जिसं
ाणन्ता पांच पांच है जघन्य गया तीन नाणन्ता तीनतीन (१
आयुष्य अन्तर महुर्त (२) अनुबन्ध अन्तर महुर्त (३) अध्यव
शाय अप्रसस्थ, उत्कृष्ट गमा तीन नाणन्ता दो दो (१) आयुष्य
ूर्व कोडका (२) अनुबन्ध पूर्वकोडका एवं बारह स्थानमें पांच
ांच नाणन्ता होनेसे सब ६० नाणन्ता हुवा ।

(२) संज्ञी तीर्यंच मरके २७ स्थानमें जाता है नाणन्ता
दश दश है । जघन्य गमा तीन नाणन्ता आठ आठ (१) अव-
ाहान ज० अंगुलके असंख्यातमें भाग उ० प्रत्यक धनुष्य (२)
लेश्या नरकमें जानेवालोंमें तीन तथा देवलोकमें जानेवालोंमें च्यार
तथा पांच (३) दृष्टी एक मिथ्यात्वकि (४) ज्ञानन ही किंतु
अज्ञान दोय (५) योग एक कायाका (६) आयुष्य अन्तर महुर्तका

(७) अनुबन्ध अन्तरमहुर्तका, (८) अध्यवसाय नरकमें जानेवालोंका अप्रसस्थ, देवतोमें जानेवालोका प्रसस्थ, एवं ८। उत्कृष्ट गमा तीन नाणन्ता दो दो (१) आयुष्य पूर्वकोडका (२) अनुबन्ध भी पूर्वकोडका एव २७ स्थानमें दश दश नाणन्ता होनेसे २७० परन्तु ६-७-८ वा देवलोकमें लेश्याका नाणन्ता नहीं होनेसे २७० से तीन बाद करनेसे २६७ नाणन्ता हुआ।

(३) मनुष्य मरके १५ स्थानमें जाता है। नाणन्ता आठ है, जघन्य गमा तीन नाणन्ता पांच पांच (१) अवगाहाना ज० अगुलके असंख्यातमे भाग उ० प्रत्यक अगुलकी (२) तीन ज्ञान तीन अज्ञान कि भजना (३) समुद्घात तीन प्रथमकि (४) आयुष्य प्रत्यक मासका (५) अनुबंध प्रत्यक मासका, उत्कृष्ट गमा तीन नाणन्ता तीन तीन (१) अवगाहाना पांचसो धनुष्यकि (२) आयुष्य कोड पूर्वका (३) अनुबध कोड पूर्वका एव १५ स्थानमें आठ आठ नाणन्ता होनेसे १२० नाणन्ता हुवा।

(४) मनुष्य मरके १९ स्थानोंमें जावे नाणन्ता छे छे। ज० गमा तीन नाणन्ता तीन तीन (१) अवगाहाना प्रत्यक हाथकि (२) आयुष्य प्रत्यक वर्षका (३) अनुबंध प्रत्यक वर्षका। उ० गमा तीन नाणन्ता तीन तीन (१) अवगाहाना पांचसो धनुष्य (२) आयुष्य कोड पूर्वका (३) अनुबन्ध कोड पूर्वका एव १९ को छे गुना करनेसे ११४ नाणन्ता हुवा।

(५) तीर्यंच युगलीया मरके १४ स्थानमे जावे, नाणन्ता पांच पांच ज० गमा तीन नाणन्ता तीन तीन (१) अवगाहाना

भुवनपति व्यन्तरमें जावे तो ज० प्रत्यक धनुष्य कि उ० हम योजन साधिक। ज्योतीपीमें जावे तों ज० प्रत्यक धनुष्य उ १८००धनुष्य. सौधर्म ईशानमें जावे तों ज० प्रत्यक धनुष्य उ० दोयगाउ तथा दोयगाउ साधिक (२) आयुष्य भुवनपति व्यन्तरमें जावे तों कोडपूर्व साधिक जोतीपीमें पल्योपमके आठमे भाग सोधर्म इशानमें जावे तो एक पल्योपम तथा एक पल्योपम साधिक उ० तीनपल्योपम। (३) अनुबन्ध आयुष्यकी माफिक। उ० गमा तीन नाणन्ता दो दो (१) अयुष्य तीन पल्योपमका (२) अनुबन्ध भी तीन पल्योपमका एवं १४ स्थानकों पांचगुने करनेसे ७० नाणन्ता हुवा।

(६) मनुष्ययुगलीया १४ स्थान जावे नाणन्ता छे छे। ज० गमा तीन नाणान्ता तीन तीन (१) अवगाहाना भुवनपति व्यन्तरमें जावे तों पाच सो धनुष्य साधिक. ज्योतीपोमें जावेतों ९०० धनुष्य साधिक. सौधर्म देवलोक जावे तों एक गाउ इशांन देवलोक जावे तो साधिक एक गाउ (२) आयुष्य भुवनपति व्यंतरमें जावे तो साधिक कोड पूर्व. ज्योतीषयोंमें जावे तो पल्योपमके आठवा भाग. सौधर्म देवलोकमें जावे तो एक पल्योपम. इशानमें साधिक पल्योपम (३) अनुबन्ध आयुष्य कि माफिक। उत्कृष्ट गमा तीन नाणन्ता तीन तीन (१) अवगाहाना तीनगाउ (२) आयुष्य तीन पल्योपम (३) अनुबन्ध आयुष्यके माफीक एव चौदस्थानसे छे गुना करनेसे ८४ नाणन्ता हुवा।

(७) दश भुवनपति. व्यन्तर. ज्योतीषी. सौधर्म. ईशा

वलोक यह चौदा स्थानकेदेव मरके पृथ्वी पाणी वनास्पतिमें
ावे. नाणन्ता च्यार च्यार । ज० गमातीन नाणन्ता दो दो
१) स्वस्थानका जघन्य आयुष्य (२) अनुबन्ध आयुष्य माफीक,
त्कृष्ट गमा तीन नाणन्ता दो दो (१) स्वस्थानका उ० आयुष्य
२) अनुवन्ध आयुष्य कि माफिक एवं चौदाकों च्यार गुने
करनेसे ५६ पृथ्वी कायका ५६ अपकायका ५६ वनास्पति कायका
र्व १६८ नाणन्ता हुवा ।

(८) पृथ्वीकाय मरके पृथ्वी कायमें उत्पन्न होते हैं नाणन्ता
छे छे ज० गमातीन नाणन्ता च्यार च्यार (१) लेश्या तीन (२)
अन्तर महुर्तका आयुष्य (३) अनुबन्ध अन्तर महुर्तका (४)
अध्यवसाय अप्रसस्थ, उ० गमातीन नाणन्ता दो दो (१) आयुष्य
२२००० वर्ष (२) अनुवन्ध २२००० वर्ष, एवं अपकाय
परन्तु आयुष्य उत्कृष्ट ७००० वर्ष एव तेउकाय परन्तु लेश्याका
नाणन्त वर्जके पाच नाणन्ता है उ० आयुष्यानुबन्ध तीनरात्रीका
एवं वायुकाय परन्तु समुद्घातका नाणन्त अधिक होनेसे ६ नाण
ता है उ० आयुष्यानुवन्ध ३००० वर्ष एव वनास्पतिकाय
परन्तु नाणन्ता सात है जिसमें ६ तो पृथ्वीवत (७) अवगाहन.
उ० प्रत्यक अगुलकी है सर्व ३० नाणन्ता हुवा । तीनवैकलेन्द्रिय
और असंज्ञी तीर्यंच पाचेन्द्रिय मरके पृथ्वी कायमें जावे जिसका
नाणन्ता नौ नौ है ज० गमातीन नाणन्त सात सात (१) अव-
गाहाना अंगुलके असंख्यातमें भाग (२) दृष्टी मिथ्यात्वकि (३)
अज्ञानदोय (४) योगकायाको (५) आयुष्य अन्तर महुर्तका (६)

भुवनपति व्यन्तरमें जावे तो ज० प्रत्यक धनुष्य कि उ० हजा
योजन साधिक। ज्योतीषीमें जावे तों ज० प्रत्यक धनुष्य उ०
१८००धनुष्य. सौधर्म ईशानमें जावे तों ज० प्रत्यक धनुष्य उ०
दोयगाउ तथा दोयगाउ साधिक (२) आयुष्य भुवनपति व्यन्तरमें
जावे तों कोडपुर्व साधिक जोतीषीमें पल्योपमके आठमे भाग
सौधर्म इशानमें जावे तों एक पल्योपम तथा एक पल्योपम साधिक
उ० तीनपल्योपम। (३) अनुबन्ध आयुष्यकी माफिक। उ
गमातीन नाणन्ता दो दो (१) आयुष्य तीन पल्योपमका (२
अनुबन्ध भी तीन पल्योपमका एवं १४ स्थानकों पांचगुने करनेसे
७० नाणन्ता हुवा।

(६) मनुष्ययुगलीया १४ स्थान जावे नाणन्ता छे छे।
ज० गमा तीन नाणान्ता तीन तीन (१) अवगाहाना भुवनपति
व्यन्तरमें जावे तों पाच सो धनुष्य साधिक. ज्योतीषीमें जावेतो
९०० धनुष्य साधिक. सौधर्म देवलोक जावे तों एक गाउ
इशांन देवलोक जावे तो साधिक एक गाउ (२) आयुष्य
भुवनपति व्यंतरमें जावे तो साधिक कोड पूर्व. ज्योतीषीमें
जावे तो पल्योपमके आठवा भाग. सौधर्म देवलोकमें जावे तो एक
पल्योपम. इशांनमें साधिक पल्योपम (३) अनुबन्ध आयुष्य कि
माफिक। उत्कृष्ट गमा तीन नाणन्ता तीन तीन (१) अवगाहाना
तीनगाउ (२) आयुष्य तीन पल्योपम (३) अनुबन्ध आयुष्य
माफीक एवं चौदस्थानसे छे गुना करनेसे ८४ नाणन्ता हुवा।

(७) दश भुवनपति. व्यन्तर. ज्योतीषी. सौधर्म. ईशा

ीक यह चौदा स्थानकेदेव मरके पृथ्वी पाणी वनास्पतिमें
. नाणन्ता च्यार च्यार । ज० गमातीन नाणन्ता दो दो
स्वस्थानका जयन्य आयुष्य (२) अनुवन्ध आयुष्य माफीक,
ष्ट गमा तीन नाणन्ता दो दो (१) स्वस्थानका उ० आयुष्य
अनुवन्ध आयुष्य कि माफिक एवं चौदाकों च्यार गुने
से ५६ पृथ्वी कायका ५६ अपकायका ५६ वंनास्पति कायका
१६८ नाणन्ता हुवा ।

(८) पृथ्वीकाय मरके पृथ्वी कायमें उत्पन्न होते हैं नाणन्ता
छे ज० गमातीन नाणन्ता च्यार च्यार (१) लेश्या तीन (२)
तर महुर्तका आयुष्य (३) अनुवन्ध अन्तर महुर्तका (४)
यवसाय अप्रसस्थ, उ० गमातीन नाणन्ता दो दो (१) आयुष्य
२००० वर्ष (२) अनुवन्ध २२००० वर्ष, एवं अपकाय
न्तु आयुष्य उत्कृष्ट ७००० वर्ष एव तेउकाय परन्तु लेश्याका
गन्त वर्जके पाच नाणन्ता है उ० आयुष्यानुबन्ध तीनरात्रीका
वायुकाय परन्तु समुद्घातका नाणन्त अधिक होनेसे ६ नाण-
है उ० आयुष्यानुबन्ध ३००० वर्ष एव वनास्पतिकाय
न्तु नाणन्ता सात है जिसमें ६ तो पृथ्वीवत् (७) अवगाहना
० प्रत्यक अंगुलकी है सर्व ३० नाणन्ता हुवा । तीनवैकलेन्द्रिय
ीर असंज्ञी तीर्यंच पाचेन्द्रिय मरके पृथ्वी कायमें जावे जिसके
ाणन्ता नौ नौ है ज० गमातीन नाणन्त सात सात (१) अव-
गाहाना अंगुलके असंख्यातमें भाग (२) दृष्टी मिथ्यात्वकि (३)
ज्ञानयोग (४) योगकायाको (५) आयुष्य अन्तर महुर्तका (६)

अनुबंध अंतर महुर्तका (७) अध्यवसाय अप्रसस्थ । उ० ग
नाणन्ता दो दो (१) आयुष्य स्वस्व स्थानका उत्कृष्ट (२)
बंध आयुष्य माफीक । २६ नाणन्ता हुवा । संज्ञी तीर्यंच
न्द्रिय मरके पृथ्वी कायमें आवे जिस्का नाणन्ता ११ ज०
तीन नाणन्ता नौ है ७ पूर्ववत् (८) लेश्यातीन (९) ...
उ० गमामें दो नाणन्ता पूर्ववत् एवं ११ । संज्ञी मनुष्य
पृथ्वी कायमें आवे जिस्का नाणन्ता १२ ज० गमातीन नाणन्ता
तीर्यंचवत् उ० गमातीन नेणन्ता तीन (१) अवगाहाना
मनुष्य (२) आयुष्य पूर्वकोट (३) अनुबन्ध पूर्वकोडका
१२। एव सर्व ३०–२६–११–१२ कुल ८९ एवं शेष
स्थावर तीन वेकलेन्द्रियके ८९–८९ गीननेसे ७१२ ना०
हुवा।

(९) पाच स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय असंज्ञी तीर्यंच
तीर्यच सज्ञी मनुष्य मरके तीर्यंच पाचेन्द्रियमे जावे जिसके ८
नाणन्ता तो पृथ्वीवत् समझना और १७ स्थान वैक्रयका तीर्यंचमें
आवे जिस्का नाणन्ता च्यार च्यार है ज० गमातीन नाणन्ता
दो दो (१) स्व स्वस्थानकी ज० स्थिति (२) अनुबंध आयुष्य
माफीक उ० गमातीन नाणन्ता दो दो (१) स्व स्वस्थानका उत्कृष्ट
आयुष्य (२) अनुबघ आयुष्य माफीक एवं १०८ तथा ८
पूर्वक सर्व १९७।

(१०) तीन स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय तीर्यंच पांचेन्द्रि
मनुष्य मरके मनुष्यमें जावे जिस्का ८९ नाणन्तासे तेउ वायु
११ वाद करतों ७८ नाणन्ता रहा और वैक्रयके ३२ स्थान

मनुष्यमें आवे जिस्का नाणन्ता च्यार च्यार ज० गमा
नाणन्ता दो दो (१) स्वस्व स्थानका ज० आयुष्य (२)
बंध आयुष्य मादीक। उ० गमातीन नाणन्ता दो दो (१)
व स्थानका उ० आयुष्य (२) अनुबन्ध आयुष्य माफीक एवं
८ तथा पूर्वका ७८ मीलानेसे २०६ नाणन्ताहुवा।
सर्व ६०-२६७-१२०-११४-७०-८४-१६८-७१२
७-२०६ कुल १९९८ नाणन्ता हुवा। इति।

यह आठ द्वारोंसे गमाका थोकडा भव्यात्मावोंके कंठस्थ
नेके लिये संक्षिप्तसे सार लिखा है इस्के अन्दर ऋद्धिका २०
र है वह लघु दंडकादिसे स्व उपयोगसे सर्व प्रयोगस्थान पर
ालेना उसका विस्तार थोकडा नम्बर २में लिखा जावेगा परन्तु
तर यह थोकडा कंठस्थ करलेनेसे आगेका सबन्ध सुख पूर्वक
मझमें आते जावेगा वास्ते हमार निवेदन है कि द्रव्यानुयोग
ीक भाइयोंको एसे अपूर्व ज्ञानकों कंठस्थ कर अपना नर भवकों
वश्य पवित्र बनाना चाहिये। किमधिकम्

सेवं भंते सेव भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० २

सूत्र श्री भगवतीजी शतक २४ वां

(गमाधिकार)

इस महान् गंभिर रहस्यवाला गमाधिकार समजनेमें सौरय
ाहित्यरूप लघु दंडक है वास्ते प्रथम पाटक वर्गकों लघुदंडक
कण्ठस्थ करलेना चाहिये।

इस थोकड़ामें मौख्य दोय बातों प्रथम ठीक ठीक समझनी चाहिये (१) गमा जीसका नौ भेद है (२) नदि निस्का ... द्वार है।

(१) गमा—गति, जाति, के अन्दर गमनागमन क... जिस्मे भव तथा कालकि मर्यादा बतानेवालेकों गमा कहते है जेसे तीर्यंच पांचेन्द्रि रत्नप्रभा नरकमें जावे तों जघन्य दोभव एक तीर्यंचकों, दुसरो नरककों यह दोय भवकर नरकसे निकल मनुष्यमें जावे। उत्कृष्ट आठ भव—च्यार तीर्यंचका, च्यारनरकका फीरतों अन्य स्थान (मनुष्यमें)में जाना हीपडे कारण तीर्यंच और रत्नप्रभा नरकके आठ भवसे अधिक नहीं करे। कालकि अपेक्षा तीर्यंच पांचेन्द्रियका ज० अन्तर मुहुर्त। उ० पूर्वकोड ... नरकका ज० दशहजार वर्ष। उ० एक सागरोपमकि स्थिति जिस्के नौगमा होता है यथा।

(१) 'ओघसे ओघ' ओघ कहते है समुच्चयकों। जीस्मे जघन्य और उत्कृष्ट दोनों प्रकारका आयुष्य समावेस हो शक्ता है। जेसे ज० दोयभव अन्तर महूर्तसे कोड पूर्वका तीर्यंच रत्नप्रभा नरकमें उत्पन्न होते है, वहापर दशहजार वर्षसे एक सागरोपमकि स्थिति प्राप्त करता है तथा आठभव करे तों च्यार अन्तर महुर्त च्यार कोड पूर्व तीर्यंचका काल और चालीसहजार वर्षसे च्यार सागरोपम नारकीका काल यह प्रथम 'ओघसे ओघ' गमाहुवा।

(२) 'ओघसे जघन्य' तीर्यंचका जघन्य उत्कृष्ट काल और नारकीका स्वस्थान पर जघन्यकाल।

(३) ' ओघसे उत्कृष्ट ' तीर्यंचका ज० उ० काल और नारकीका उत्कृष्ट काल समझने ।

(४) 'जघन्यसे ओघ' तीर्यंचकाजघन्य और नरकीका ओघकाल ।

(५) 'जघन्यसे जघन्य' तीर्यंच और नारकी दोनोंका जघन्यकाल।

(६) 'जघन्यसे उत्कृष्ट' तीर्यंचका जघ०काल और नरकका उ०काल

(७) 'उत्कृष्टसे ओघ' तीर्यंचका उत्कृष्ट और नरकका ओघकाल।

(८) 'उ०से जघन्य' तीर्यंचका उत्कृष्ट और नरकका जघ०काल।

(९) ' उ०से उत्कृष्ट ' तीर्यंच और नरक दोनोंका उत्कृष्टकाल।

(२) ऋद्धि=जिस्का १० द्वार है। जो जीव परभव गमन करता है वह इस भवसे कोनसी कोनसी ऋद्धि साथमें लेके जात है, जेसे तीर्यंच पांचेन्द्रिय रत्नप्रभा नरकमें जाता है तों कितनि ऋद्धि साथमें ले जाता है यथा—

(१) उत्पाद=तीर्यंच पांचेन्द्रियसे नरकमें उत्पन्न होता है।

(२) परिमाण=एक समयमें १—२—३ यावत् असख्यात

(३) संघयण—छे ओं संघयणवाला तीर्यंच नारकीमें उत्पन्न है

(४) अवगाहाना—जघन्य अंगुलके अस० भाग। उ० हजा योजनवाला, तीर्यंच नरकमें उत्पन्न होता है।

(५) संस्थान—छे वो स्थानवाला।

(६) लेश्या—छेवों लेश्यावाला। (भवापेक्षा)

(७) ज्ञानाज्ञान—तीनज्ञान तथा तीनज्ञानकि भजना।

(८) द्रष्टी तीन–सम्पुरण भवापेक्षा होनेसे तीन द्रष्टी है

(९) योग तीन–तीनों योगवाला ।

(१०) उपयोग–दोय–साकार आनाकार ।

(११) संज्ञा–संज्ञाच्यारवाला ।

(१२) कषायच्यार–च्यारोंकषायवाला ।

(१३) इन्द्रिय–पांच–पांचोइन्द्रियवाला ।

(१४) समुद्घात–पांच समुद्घातवाला । क्रम सर

(१५) वेदना–साता असाता दोनो वेदनावाला ।

(१६) वेदतीन–तीनों वेदवाला ।

(१७) अध्यवसाय–असंख्याते वह अप्रशस्थ ।

(१८) आयुष्य–ज० अन्तर महुर्त । उ० क्रोडपूर्ववाला ।

(१९) अनुबन्ध आयुष्य माफीक (कायस्थिति)

(२०) संभहो–कालादेशेण और भवादेशेण। भवापेक्षा ज० दोयभव उ० आठभव, कालापेक्षा नो पहला लिख गया है।

इस गमानामाके चौवीशवां शतकका चौवीस उदेश है यथा सातों नरकका प्रथम उदेशा, दश भुवनपतियोंके दश उदेशा, पांच स्थावरोंका पाच उद्देशा, तीन वेकलेन्द्रिका तीन उदेशा, तीर्यंच पांचेन्द्रिय, मनुष्य, व्यन्तरदेव, ज्योतीषीदेव, वैमानिकदेव, इन्ही पांचोका प्रत्यक पांच उद्देशा एवं सर्व मीलके २४ उद्देशा है ।

(१) नरकका पहला उद्देशा है जिस नरकका सात भेद है

प्रथा=रत्नप्रभा शार्करप्रभा वालुकाप्रभा पङ्कप्रभा धूमप्रभा तमप्रभा तमतमाप्रभा इस सातों नरकमें उत्पन्न होनेवाला जीव भिन्न भिन्न स्थानोंसे आते है वास्ते पेस्तर सबके आगति स्थान लिख देना उचित होगा क्युकि आगे बहुत सुगम हो जायगा ।

(१) रत्नप्रभा नरककि आगति पाच संज्ञी तीर्यंच[१] पाच असंज्ञी तीर्यच, एक संख्याते वर्षका कर्मभूमि मनुष्य एवं ११ स्थानसे आ-के रत्नप्रभा नरकमें उत्पन्न होता है ।

(२) शार्कर प्रभाकि आगति पांच संज्ञी तीर्यच और संख्याते वर्षका कर्मभूमि मनुष्य एव छे स्थानसे आवे ।

(३) वालुकाप्रभाकि आगति पाच स्थानकि भुजपुर वर्जके ।

(४) पङ्कप्रभाकि आगति खेचर वर्जके च्यार स्थानकि ।

(५) धूमप्रभाकि आगति थलचर वर्जके तीनस्थानकि ।

(६) तमप्रभाकि आगति उरपुरी वर्जके दोय स्थानकि ।

(७) तमतमा प्रभाकि आगति दोयकि परन्तु स्त्रि नहीं आवे।

रत्न प्रभा नरककि ११ स्थानकि आगति है जिसमे पाच असंज्ञी तीर्यच आते है वह एवं २० द्वारसे कितनी कितनि ऋद्धि लेके आते है ।

(१) उत्पात असंज्ञी तीर्यचसे ।

(२) परिमाण—एक समयमे १–२–३ यावत संख्याते ।

(३) संहनन एक छेवटा संहननवाला तीर्यच ।

---

१ [illegible]

कारण असंज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रिय नरक जाता है परन्तु नरकसे निकलके असंज्ञी तीर्यच पांचेन्द्रिय नहीं होता है। कालापेक्षा ज० दश हजार वर्ष अन्तर महुर्त अधिक उ० पल्योपमके असंख्यातमें भाग और कोड पूर्व अधिक इती २० द्वार।

असंज्ञी तीर्यंच पाचेन्द्रिय और रत्नप्रभा नरकके नौगमा।

(१) 'ओघसे ओघ' भवादेशेणं दोय भव, कालादेशेण, दश हजार वर्ष अन्तर महुर्त अधिक। उ० कोड पूर्वाधिक पल्योपमके असंख्यात भाग। १।

(२) 'ओघसे जघन्य' अन्तर महुर्त दशहजार वर्ष। उ० कोडपूर्व दशहजार वर्ष।

(३) 'ओघसे उत्कृष्ट' अन्तर महुर्त पल्योपमके असंख्याते भाग, पूर्व कोड वर्ष और पल्यापमके असंख्यातमों भाग।

(४) 'जघन्यसे ओघ' अन्तर महुर्त दश हजार वर्ष। उ० अन्तर महुर्त और पल्योपमके असंख्यामें भाग।

(५) 'ज०से जघन्य' अन्तर महुर्त दशहजार वर्ष। अन्तर महुर्त और दशहजार वर्ष।

(६) ज०से उत्कृष्ट, अन्तर महुर्त पल्योपमके असंख्याते भाग। उ० अन्तर महुर्त पल्योपमके असंख्याते भाग।

(७) 'उत्कृष्टसे ओघ' कोड पूर्व दश हजार वर्ष, कोडपूर्व पल्योपमके असंख्याते भाग।

(८) 'उ०से जघन्य' कोडपूर्व दशहजार वर्ष, उ० कोडपूर्व और दशहजार वर्ष।

(९) 'उ०से उत्कृष्ट' कोडपूर्व, पल्योपमके असंख्याते भाग,

कारण असंज्ञी तीर्यच पांचेन्द्रिय नरक जाता है परन्तु नरकसे निकलके असंज्ञी तीर्यच पांचेन्द्रिय नहीं होता है। कालापेक्षा ज० दश हजार वर्ष अन्तर महुर्त अधिक उ० पल्योपमके असंख्यातमें भाग और कोड पूर्व अधिक इती २० द्वार।

असंज्ञी तीर्यच पांचेन्द्रिय और रत्नप्रभा नरकके नौगमा।

(१) 'ओघसे ओघ' भवादेशेणं दोय भव, कालादेशेण, दश हजार वर्ष अन्तर महुर्त अधिक। उ० कोड पूर्वाधिक पल्योपमके असंख्यात भाग। १।

(२) 'ओघसे जघन्य' अन्तर महुर्त दशहजार वर्ष। उ० कोडपूर्व दशहजार वर्ष।

(३) 'ओघसे उत्कृष्ट' अन्तर महुर्त पल्योपमके असंख्याते भाग, पूर्व कोड वर्ष और पल्योपमके असंख्यातमो भाग।

(४) 'जघन्यसे ओघ' अन्तर महुर्त दश हजार वर्ष। उ० अन्तर महुर्त और पल्योपमके असंख्यामें भाग।

(५) 'ज०से जघन्य' अन्तर महुर्त दशहजार वर्ष। अन्तर महुर्त और दशहजार वर्ष।

(६) ज०से उत्कृष्ट, अन्तर महुर्त पल्योपमके असंख्याते भाग। उ० अन्तर महुर्त पल्योपमके असंख्याते भाग।

(७) 'उत्कृष्टसे ओघ' कोड पूर्व दश हजार वर्ष, कोडपूर्व पल्योपमके असंख्याते भाग।

(८) 'उ०से जघन्य' कोडपूर्व दशहजार वर्ष, उ० कोडपूर्व और दशहजार वर्ष।

(९) 'उ०से उत्कृष्ट' को [illegible] पूर्व, [illegible]

कारण असंज्ञी तीर्यच पांचेन्द्रिय नरक जाता है परन्तु नरकसे निकलके असंज्ञीं तीर्यच पांचेन्द्रिय नहीं होता है। कालापेक्षा ज० दश हजार वर्ष अन्तर महुर्त अधिक उ० पल्योपमके असंख्यातमें भाग और कोड पूर्व अधिक इती २० द्वार।

असंज्ञी तीर्यच पांचेन्द्रिय और रत्नप्रभा नरकके नौगमा।

(१) 'ओघसे ओघ' भवादेशेणं दोय भव, कालादेशेणं, दश हजार वर्ष अन्तर महुर्त अधिक। उ० कोड पूर्वाधिक पल्योपमके असंख्यात भाग। १।

(२) 'ओघसे जघन्य' अन्तर महुर्त दशहजार वर्ष। उ० कोडपूर्व दशहजार वर्ष।

(३) 'ओघसे उत्कृष्ट' अन्तर महुर्त पल्योपमके असंख्याते भाग, पूर्व कोड वर्ष और पल्यापमके असंख्यातमो भाग।

(४) 'जघन्यसे ओघ' अन्तर महुर्त दश हजार वर्ष। उ० अन्तर महुर्त और पल्योपमके असंख्यामें भाग।

(५) 'ज०से जघन्य' अन्तर महुर्त दशहजार वर्ष। अन्तर महुर्त और दशहजार वर्ष।

(६) ज०से उत्कृष्ट, अन्तर महुर्त पल्योपमके असंख्याते भाग। उ० अन्तर महुर्त पल्योपमके असंख्याते भाग।

(७) 'उत्कृष्टसे ओघ' कोड पूर्व दश हजार वर्ष. कोडपूर्व पल्योपमके असंख्याते भाग।

(८) 'उ०से जघन्य' कोडपूर्व दश हजार वर्ष, उ० कोडपूर्व और दशहजार वर्ष।

(९) 'उ०से उत्कृष्ट' कोडपूर्व, पल्योपमके असंख्याते

कारण असंज्ञी तीर्यच पाचेन्द्रिय नरक जाता है परन्तु नरकसे निकलके असंज्ञी तीर्यच पांचेन्द्रिय नहीं होता है। कालापेक्षा ज० दश हजार वर्ष अन्तर महुर्त अधिक उ० पल्योपमके असंख्यातमें भाग और कोड पूर्व अधिक इती २० द्वार।

असंज्ञी तीर्यच पांचेन्द्रिय और रत्नप्रभा नरकके नौगमा।

(१) 'ओघसे ओघ' भवादेशेणं दोय भव, कालादेशेणं, दश हजार वर्ष अन्तर महुर्त अधिक। उ० कोड पूर्वाधिक पल्योपमके असंख्यात भाग। १।

(२) 'ओघसे जघन्य' अन्तर महुर्त दशहजार वर्ष। उ० कोडपूर्व दशहजार वर्ष।

(३) 'ओघसे उत्कृष्ट' अन्तर महुर्त पल्योपमके असंख्याते भाग, पूर्व कोड वर्ष और पल्यापमके असंख्यातमों भाग।

(४) 'जघन्यसे ओघ' अन्तर महुर्त दश हजार वर्ष। उ० अन्तर महुर्त और पल्योपमके असंख्यामें भाग।

(५) 'ज०से जघन्य' अन्तर महुर्त दशहजार वर्ष। अन्तर महुर्त और दशहजार वर्ष।

(६) ज०से उत्कृष्ट, अन्तर महुर्त पल्योपमके असंख्याते भाग। उ० अन्तर महुर्त पल्योपमके असंख्याते भाग।

(७) 'उत्कृष्टसे ओघ' कोड पूर्व दश हजार वर्ष. कोडपूर्व पल्योपमके असंख्याते भाग।

(८) 'उ०से जघन्य' कोडपूर्व दश हजार वर्ष, उ० कोड[illegible] और दशहजार वर्ष।

(९) 'उ०से उत्कृष्ट' कोडपूर्व. पल्योपमके असंख्याते

कारण असंज्ञी तीर्यंच पाचेन्द्रिय नरक जाता है परन्तु नरकसे निकलके असंज्ञी तीर्यच पांचेन्द्रिय नहीं होता है। कालापेक्षा ज० दश हजार वर्ष अन्तर महुर्त अधिक उ० पल्योपमके असंख्यातमें भाग और कोड पूर्व अधिक इती २० द्वार।

असंज्ञी तीर्यच पाचेन्द्रिय और रत्नप्रभा नरकके नौगमा।

(१) 'ओघसे ओघ' भवादेशेणं दोय भव, कालादेशेण, दश हजार वर्ष अन्तर महुर्त अधिक। उ० कोड पूर्वाधिक पल्योपमके असंख्यात भाग। १।

(२) 'ओघसे जघन्य' अन्तर महुर्त दशहजार वर्ष। उ० कोडपूर्व दशहजार वर्ष।

(३) 'ओघसे उत्कृष्ट' अन्तर महुर्त पल्योपमके असंख्याते भाग, पूर्व कोड वर्ष और पल्यापमके असंख्यातमो भाग।

(४) 'जघन्यसे ओघ' अन्तर महुर्त दश हजार वर्ष। उ० अन्तर महुर्त और पल्योपमके असंख्यामें भाग।

(५) 'ज०से जघन्य' अन्तर महुर्त दशहजार वर्ष। अन्तर महुर्त और दशहजार वर्ष।

(६) ज०से उत्कृष्ट, अन्तर महुर्त पल्योपमके असंख्याते भाग। उ० अन्तर महुर्त पल्योपमके असंख्याते भाग।

(७) 'उत्कृष्टसे ओघ' कोड पूर्व दश हजार वर्ष. कोडपूर्व पल्योपमके असंख्याते भाग।

(८) 'उ०से जघन्य' कोडपूर्व दश हजार वर्ष. उ० कोड[illegible] और दशहजार वर्ष।

(९) 'उ०से उत्कृष्ट' कोडपूर्व. पल्योपमके असंख्याते

(४) अवगाहाना–ज० अगुलके असं० भाग उ० हजार योजनवाला ।

(५) संस्थान–छे वों संस्थानवाला ।

(६) लेश्या–छे वों वाला (७) दृष्टी तीनोवाला ।

(८) ज्ञान–तीनज्ञान तथा तीन अज्ञानकि भजना ।

(९) योग–तीनों (१०) उपयोग दोनों (११) संज्ञाच्यार ।

(१२) कषाय च्यारो (१३) इन्द्रिय पांचों (१४) समुद्घात पांचों (१५) वेदना–सातासाता (१६) वेद तीनों प्रकरके । (१७) स्थिति ज० अन्तर महुर्त उ० कोड पूर्ववाला । (१८) अध्यवसाय–असंख्याते, प्रसस्थ, अप्रसस्थ । (१९) अनुबन्ध–ज० अन्तर महुर्त उ० कोड पूर्व वर्षका । (२०) संभद्दो–भवापेक्षा ज० दोयभव उ० आठभव, काला पेक्षा ज० अन्तर महुर्त दश हजार वर्ष उ० च्यार कोड पुर्व और च्यार सागरोपम इतना कल तक तीर्यच और रत्नप्रभा नरकमें गमनागमन करे जिस्का नौ गमा ।

(१) ओघसे ओघ–दश हजार वर्ष अन्तर महुर्त च्यार कोट पुर्व च्यार सागरोपम ।१।

(२) ओघसे जघन्य–अन्तर महुर्त दश हजार वर्ष च्यार कोड पुर्व और चालीस हजार वर्ष ।२।

(३) ओघसे उत्कृष्ट' अन्तर महुर्त एक सागरोपम उ० च्यार कोड पुर्व और च्यार सागरोपम । ३ ।

(४) ज० से ओघ' अन्तर महुर्त दश हजार वर्ष उ० च्यार अन्तर महुर्त च्यार सागरोपम ।४।
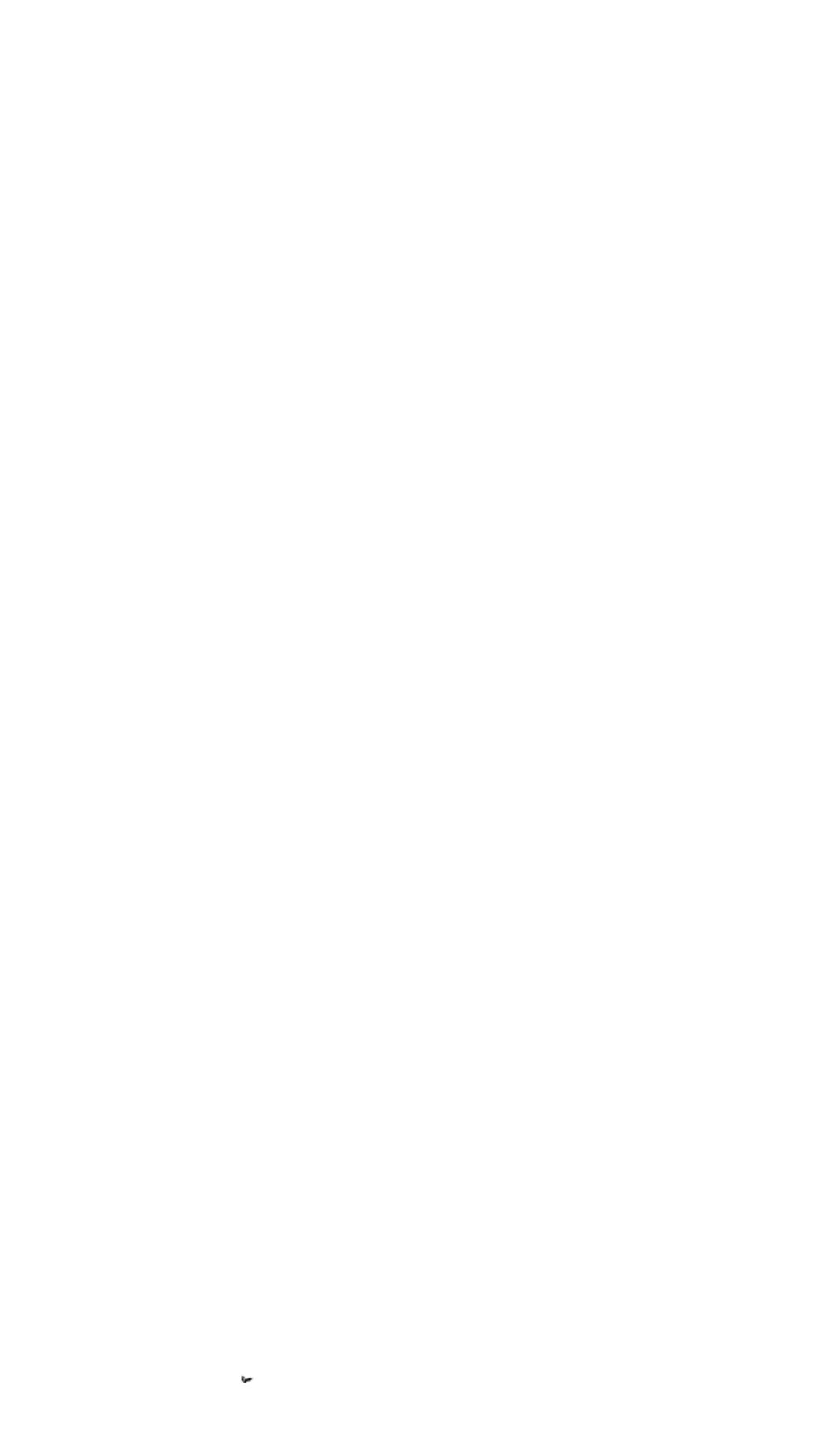
(१) स्थिति, ज० उ० कोडपूर्वका ।

(२) अनुबन्ध, ज० उ० पूर्वकोड ।

संज्ञी तीर्यच पाचेन्द्रिय जैसे रत्नप्रभा नरकमें उत्पन्न हुवे जिसकि ऋद्धि तथा नौगमा कहा है इसी माफीक शार्करप्रभामें भी समझना परंतु शार्करप्रभामें स्थिति जघन्य एक सागरोपम उ० तीन सागरोपमकि है वास्ते नौगमामें स्थिति उपयोगसे कहेना शेषाधिकार रत्नप्रभावत् समझना ।

भवापेक्षा ज० दोय उ० आठ भव, कालापेक्षा नौगमा ।

(१) ओघसे ओघ, अन्तर महुर्त एक सागरोपम । उ० च्यार कोडपूर्व १२ सागरो०

(२) ओघसे ज० अन्तर० एक सागरो० । उ० च्यार अन्तर० च्यार सागरो० ।

(३) ओघसे उ० अन्तर० एक सागरो० उ० च्यार कोडपूर्व १२ सागरो०

(४) ज० से ओघ. अन्तरमहुर्त एक सागरोपम उ० च्यार अन्तर बारहा सागरोपम ।

(५) ज०से जघन्य, अन्तर० एक सागरो० च्यार अन्तर० च्यार सागरो०

(६) ज०से उत्कृ० अन्तर० एक सागरो० च्यार कोडपूर्व १२ सागरो०

(७) उत्कृ० से ओघ० कोडपूर्व तीन सागरो० च्यार कोडपूर्व १२ सागरो०

(५) ज० से जघन्य' अन्तर महुर्त दश हजार वर्ष उ० च्यार अन्तर महुर्त और चालीस हजार वर्ष ।५।

(६) ज० से उत्कृष्ट' अन्तर महुर्त, एक सागरोपम उ० च्यार अंतर महुर्त, च्यार सागरोपम । ६ ।

(७) उ० से ओघ' क्रोड पूर्व दश हजार वर्ष उ० च्या० क्रोड पूर्व च्यार सागरोपम ।

(८) उ० से जघन्य' क्रोड पूर्व दश हजार वर्ष, उ० च्या० क्रोड पूर्व और चालीस हजार वर्ष ।८।

(९) उ० से उत्कृष्ट, क्रोड पूर्व एक सागरोपम उ० च्या० क्रोड पूर्व और च्यार सागरोपम ।९।

नौ गमा है इसमें प्रत्यक गमापर ऋद्धिके वीस वीस लगा लेना जो तफावत है वह बतलाते है।

(३) ओघ गमा तीन १-२-३ समुच्चयवत्

(६) जघन्य गमा तीन प्रत्यक गमा, आठ नाणन्ता ।

(१) अवगाहना उ० प्रत्यक धनुष्यकि ।

(२) लेश्या तीन, कृष्ण, निल, कापोत ।

(३) दृष्टी एक मिथ्यात्वकि (४) ज्ञाननहीं अज्ञान

(५) समुद्घात, तीन, वेदनी, कषाय, मरणन्तिक

(६) स्थिति जघ० व उत्कृष्ट अन्तर महुर्तकि ।

(७) अध्यवसाय, असंख्याते, सों, अप्रसस्थ ।

(८) अनुबन्ध, जघन्य उत्कृष्ट अन्तर महुर्त ।

(३) उत्कृष्ट गमा तीन नाणन्ता दोय पावे ।

ओघसे ओघ० २२ सागरो०दोय अन्तर०उ०६६ सा०च्यार कोडपूर्व,
ओघसे ज०२२ सा०दोय अन्तर०। उ० ६६ सा०च्यार अन्तर०
ओघसे उ० २२ सा० दोय अन्तर० उ० ६६ सा० ३ कोडपूर्व
ज० ओघ० २२ सा० दोय अन्तर० उ० ६६ सा० च्यार को०
ज० ज० ,, ,, ,, च्यार अन्तर०
ज० उ० ,, ,, ,, तीन कोडपूर्व
उ० ओघ २२ सा० दोय कोडपूर्व ,, च्यार कोडपूर्व
उ० ज० ,, ,, ,, च्यार अन्तर०
उ० उ० ,, ,, ,, तीन कोड पूर्व

नाणन्ता उ० गमाती न नाणन्ता दो दोय स्थिति ज० कोडपूर्व अनुबन्ध आयुष्य कि माफीक ।

सज्ञी मनुष्य सख्याते वर्षवाले मरके रत्नप्रभा नरकमें जावे सो यहांसे जघन्य प्रत्यकमास उ० कोटपूर्व वहापर ज० दश हजार वर्ष उ० एक सागरोपमकि स्थितिमे उत्पन्न होते हैं । ऋद्धि जेसे ।

(१) उत्पात–सख्याते वर्षवाला संज्ञी मनुष्यसे ।
(२) परिमाण–एक समयमे १–२–३ उ० सख्याते ।
(३) सहनन=छे वों सहननवाला ।
(४) अवगाहाना ज० प्रत्यक अंगुल उ० ५०० धनुष्यवाला।
(५) ज्ञान–च्यार ज्ञान तीन अज्ञानकि भजना (भवापेक्षा)।
(६) समुद्घात, केवली समु० वर्जके ६ समु० वाला ।
(७) स्थिति– [illegible]मास उ० कोटपूर्व ।
(८) अनुबंध [illegible]मास उ० कोटपूर्व ।

शेष सबंद्वार सन्नी श्रीयंच पांचेन्द्रिय माफीक सनुष्य भवापेक्षा ज० दोय उ० आठ भव, कालापेक्षा ज० प्रत्यक्ष दश हजार वर्ष उ० च्यार कोडपूर्व, च्यार सागरोपम तक गमना गमन करे जिस्के गमा नौ।

ओघसे ओघ' प्रत्यक्ष दशहजार उ० च्यार कोडपूर्व च्यार सा

	मास	वर्ष	
ओघसे ज०'	,,	,,	उ० च्यार प्रत्य० ४००००
ओघसे उ०	,,	,,	उ० च्यार कोडपूर्व च्यार सा
ज०से ओघ	,,	,,	उ० च्यार कोटपूर्व च्यार सा
ज०से ज०	,,	,,	उ० ,, प्र०मा० ४००००
ज०से उ०	,,	,,	उ० ,, कोडपुर्व च्यार सा
उ० ओघ एक कोड पूर्व एक सा० उ० च्यार कोट पू० च्या०			
उ० ज० ,,		,,	उ० च्यार अन्तर ४००००
उ० उ० ,,		,,	उ० ,, कोड पूर्व च्यार साग

प्रत्यक गमा पर २० द्वार कि ऋद्धि पूर्ववत् लगा लेना तफाव हे सो बतलाते है ओघ गमा तीन तो पूर्ववत ही है।

जघन्य गमातीन–४–५–६ नाणन्ता ५

(१) अवगाहाना ज० अंगुलके असंख्यातमें भाग उ प्रत्यक अंगुलकि।

(२) ज्ञान–तिन ज्ञान तीन अज्ञान कि भजना।

(३) समुद्घात–पांच क्रम: सर

(४) स्थिति ज० उ० प्रत्यक मास कि

(५) अनुबन्ध–ज० उ० प्रत्यक मासकों

उत्कृष्ट गमा तीन नाणन्ता पावे तीन तीन

(१) शरीर अवगाहाना ज० उ० ५०० धनुष्यकि

(२) आयुष्य ज० उ० कोड पूर्वका

(३) अनुबन्ध ज० उ० कोड पूर्वका

संज्ञी मनुष्य मरके शार्करप्रभा नरकमें उत्पन्न होता है। स्थिति यहांसे ज० प्रत्यक वर्ष और उत्कृष्ट कोड पूर्व वहां पर ज० एक सागरोपम उ० तीन सागरोपम ऋद्धिके २० द्वार रत्नप्रभाकि माफीक परन्तु यहांपर स्थिति ज० प्रत्यक वर्ष उ० कोड पूर्व एवं अनुबन्ध और शरीर अवगाहाना ज० प्रत्यक हाथ उ० पाचसो धनुष्य कि भव ज० दोय उ० आठ काल ज० प्रत्यक वर्ष और एक सागरोपम उ० च्यार कोड पूर्व और बारह सागरोपम इतना काल तक गमनागमन करे। नौगमा रत्नप्रभाकि माफीक परन्तु स्थिति शार्करप्रभासे केहना।

३ ओघ गमा तीन १-२-३ समुच्च वत्

३ जघन्य गमा तीन ४-५-६ नाणन्ता तीन तीन

(१) अवगाहाना ज० उ० प्रत्यक हाथकि

(२) स्थिति ज० उ० प्रत्यक वर्षकि

(३) अनुबन्ध आयुष्यकि माफीक प्रत्यक वर्षकों

३ उत्कृष्ट गमा तीन नाणन्ता तीन तीन।

(१) शरीर अवगाहाना ज० उ० पांचसो धनुष्यकि

(२) आयुष्य ज० उ० कोड पूर्वको

(३) अनुबन्ध ज० उ० कोड पूर्वको

इस माफीक यावत् छठी तमपभा तक नीगमा और ऋ २० द्वारसे कहना परन्तु स्थिति स्वस्वस्थानसे केहना, संहन इस माफीक पहेली दुमी नरकमें, छे, तीजीमें पांच, चोथी च्यार, पांचमीमें तीन, छठीमें दोय, सातवी नरकमें एक व्रज ऋषभ नाराच संहनन वाला जावे ।

संज्ञी मनुष्य संख्याते वर्षवाला मरके सातवी नरकमें जावे यहांसे स्थिति ज० प्रत्यक वर्ष उ० कोड पूर्ववाला यहांपर ज० २२ सागरोपम उ० ३३ सागरोपम. ऋद्धिके २० द्वार शार्क प्रभावत् परन्तु एक संहननवाला जावे किन्तु त्रि वेदवाला न जावे। भवापेक्षा ज० दोय उ० दोय भव करे कारण मनुष्य सातवी नरक जाते हैं किन्तु वहांसे मनुष्य नही हुवे, सातवी नरकसे निकलके तो एक तीर्यंच ही होता है। कालापेक्षा ज० प्रत्यक वर्ष और २२ सागरोपम उ० कोडपूर्व और तेतीस सागरोपम.

'ओघसे ओघ'	प्रत्यक वर्ष	२२ सा०	उ० कोडपूर्व	३३ सा०
'ओघसे ज०'	,,	,,	उ० ,,	२२ सा०
'ओघसे उ०'	,,	,,	उ० ,,	३३ सा०
ज० ओघ	,,	,,	उ० ,,	३३ सा०
ज० ज०	,,	,,	उ० प्र० वर्ष	२२ सा०
ज० उ०	,,	,,	उ० कोडपूर्व	३३ सा०
उ० ओघ	कोडपूर्व	तेतीस सा०	उ० ,,	३३ सा०
उ० ज०	,,	,,	उ० प्र० वर्ष	२२ सा०
उ० उ०	,,	,,	उ० कोडपूर्व	३३ सा०

ऋद्धिके २० द्वारमें जो तफावत है से

२ ओघ गमा तीन १-२-३ समुच्चयवत्

जघन्य गमा तीन ४-५-६ नाणन्ता तीन तीन

(१) अवगाहाना ज० उ० प्रत्यक हाथकि

(२) आयुष्य० ज० उ० प्रत्यक वर्षका

(३) अनुबन्ध ज० उ० प्रत्यक ,,

३ उत्कृष्ट गमा तीन नाणन्ता तीन तीन

(१) अवगाहाना ज० उ० पांचसो धनुष्यकि

(२) आयुष्य ज० उ० कोडपूर्वका

(३) अनुबन्ध ज० उ० कोडपूर्वका ।

इति नारकिका प्रथम उद्देशो समाप्तम् ।

(२) असुरकुमार देवताका दुसरा उद्देशा।

असुरकुमारके स्थानमें पाच संज्ञी तीर्यंच, पांच असज्ञी तीर्यंच और एक मनुष्य एवं ११ स्थानोंके पर्याप्ता आते है ।

(१) असंज्ञी तीर्यच जेसे रत्नप्रभा नरकमें काहा है इसी माफीक नौगमा और ऋद्धिके २० द्वार यहांपर भी केहना परन्तु यहां पर अध्यवसाय प्रसस्थ समझना ।

(२) संज्ञी तीर्यच पांचेन्द्रिय असुरकुमारमें उत्पन्न होते है वह दोय प्रकारके है ।

(१) संख्याते वर्षवाले (२) असंख्याते वर्षवाले । जिन्में प्रथम असंख्याते वर्षवाले संज्ञी तीर्यंच पर्याप्ता असुर कुमारमें ज० दश हजार वर्ष उ० तीन पल्योपमकि स्थितिमें उत्पन्न होते है जिसपर ऋद्धिके २० द्वार।

ज० ज०   ,, ,, उ० साधि० को० १०००० वर्ष
ज० उ०   ,, ,, उ० ६ पल्योपम
उ० ओघ ६ पल्योपम उ० सा० कां० ३ पल्योपम
उ० ज०   ,, ,, उ० साधि० १०००० वर्ष
उ० उ०   ,, ,, उ० ६ पल्यो०

नाणन्ता इस माफीक है।

(१) तीजे गमे ज० उ० तीन पल्योपकि स्थितिवाला जावे।

(२) चोथे गमे ज० उ० साधिक पूर्वकोड वाला जावे और अवगाहना ज० प्रत्यक धनुष्य उ० १००० धनुष्यवाला जावे एवं ५–६ टे गम भी।

(३) सातवे गमें ज० उ० तीन पल्योंकि स्थितिवाला जावे इसी माफीक आठवे तथा नौवागमा समझना।

संज्ञी तीर्यंच पाचेन्द्रिय संख्याते वर्षवाला मरके असुरकुमार देवतोंमें जावे तो नौगमा और ऋद्धिके २० द्वार जेसे संज्ञीतीर्यंच पाचेन्द्रिय संख्याते वर्षवाला रत्नप्रभा नरकमें उत्पन्न समय कही थी इसी माफीक समझना इतना विशेष है कि रत्नप्रभामें उ० स्थिति एक सागरोपमकि थी यहापर उ० स्थिति एक सागरोपम साधिक केहना। गमा ४–५–६ लेश्या च्यार और अध्यवसाय प्रसस्थ समझना।

संज्ञी मनुष्य दोय प्रकारके है (१) संख्याते वर्षवाले (२) असंख्याते वर्षवाले जिस्मे असंख्याते वर्षवाले मनुष्य (जुगलीया) मरके असुर कुमारमें जावे तो यहापर स्थिति ज० दशहजार वर्ष

उ० तीन पल्योपमकि पाते है। नौगमा और ऋद्धिके २० द्वा
असंख्यात वर्षवाला तीर्यंचकी माफीक समझना. इतना विशे
कि प्रथमके गमा तीन जिस्में पहेला दुसरा गमामें अवगाह
जघन्य साधिक पांचसो धनुष्य उ० तीन गाउ कि तथा ती
गमामें अवगाहाना जघन्य उत्कृष्ट तीन गाउकि है। अपने ज
कालके तीन गमा ४-५-६में अवगाहाना ज० उ० सा
पांचसो धनुष्य है। और अपने उत्कृष्ट गमा तीन ७-८-
अवगाहना ज० उ० तीन गाउकि है शेष पूर्ववत्।

संख्याते वर्षका संज्ञी मनुष्य असुर कुमारमें उत्पन्न हुवे
जेसे संज्ञी संख्याते वर्षका मनुष्य, रत्नप्रभा नरकमें उत्पन्न हु
था इसी माफीक नौगमा तथा २० द्वार ऋद्धिका समझना प
गमामें उत्कृष्ट स्थिति असुरकुमारकि साधिक सागरोपमकी कहनी
शेषाधिकार रत्नप्रभावत्।

इति चौवीसवा शतकका दुसरा उद्देशा।

जेसे असुर कुमारका अधिकार कहा है इसी माफीक ना
कुमार सुवर्ण कुमार, विद्युतकुमार, अग्निकुमार, द्विपकुमार, दि
कुमार, उदधीकुमार, वायुकुमार, स्तनत्कुमार, इस नौ जातिके
तोंको नौ निकाय भि कहते है।

विशेष इतना है कि इन्होंकि स्थिति ज० दश हजार
उत्कृष्टी देशोन दोय पल्योपमकि है वास्ते गमा कालमें
स्थितिसे बोलाना।

नोट—युगलीया मनुष्य तथा तीर्थंच आपनि उत्कृष्टी स्थि
अधिक स्थिति देवतोंमें नहीं पाते है। वास्ते देवतावांके उ

स्थितिमें जानेवाला अवगाहाना ज० देशोना दोयगाउ उ० तीन-गाउ और स्थिति ज० देशोना दोय पल्योपम उ० तीन पल्योपम समझना इति ।

। इति चौवीसवा शतकका इग्यारा उद्देशा समाप्त हुवे ।

(१२) पृथ्वीकायाका उद्देशा—पृथ्वीकायाके अन्दर पांच स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय असंज्ञी तीर्यंच असंज्ञी मनुष्य. संज्ञी तीर्यंच, संज्ञी मनुष्य, दश भुवनपति व्यन्तर ज्योतीषी सौधर्म देवलोक इशान देवलोक एवं २६ स्थानसे आये हुवे जीव पृथ्वी-कायमें उत्पन्न हो शक्ते है वहां (पृथ्वीकायमें) स्थिति ज० अन्तर महुर्त उत्कृष्टी २२००० वर्षकि होती है । ऋद्धिका २० द्वार । पृथ्वीकाय मरके पृथ्वीकायमें उत्पन्न होते है जिस्की ऋद्धिके २० द्वार ।

(१) उत्पात—पृथ्वीकायासे आके उत्पन्न होते है ।

(२) परिमाण—एक समयमें १–२–३ यावत् असंख्याते ।

(३) संहनन—एक छेवट संहनन लेके आता है ।

(४) अवगाहाना—ज० उ० अंगुलके असं० भाग ।

(५) संस्थान—एक हुन्डक (चन्द्राकार) वाला

(६) लेश्या—च्यार (भव संबन्धी) वाला

(७) दृष्टी—एक मिथ्यात्ववाला ।

(८) ज्ञान—अज्ञान दोयवाला । ज्ञान नहीं होते है ।

(९) योग—एक कायाका (१०) उपयोग दोनों. सा० अ०

(११) संज्ञा च्यारों (१२) कषाय च्यारों

(१५) इन्द्रिय एक स्पर्श (१६) समुद्घात–तीन० वेदनि० कषाय० मरणन्तिक।

(१६) वेदना–साता असाता (२२) वेद एक नपुंसक।

(१७) स्थिति ज० अन्तर महुर्त. उ० २२००० वर्षका

(१८) अध्यवसाय, असंख्याते, प्रसस्थ, अप्रसस्थ।

(१९) अनुबन्ध–ज० अन्तर महुर्त उ० २२०००वर्षका

(२०) संभहो–भवापेक्षा ज० दोयभव उ० असंख्याते भव कालापेक्षा ज० दोय अन्तर महुर्त उ० असंख्याते काल। इतने काल गमनागमन करे। और नौगमा निचे प्रमाणे।

(१) ओघसे ओघ–भव ज० दोय उ० असंख्याता. काल ज० दोय अन्तर महुर्त. उ० असंख्याता काल।

(२) ओघसे ज० ज० दोयभव उ० असंख्याते भव. काल ज० दोय अन्तरमहुर्त उ० असंख्याते काल।

(३) ओघसे उ०। भव ज० दोय उ० आठ भव करे. काल ज० अन्तरमहुर्त और २२००० वर्ष. उ० १७६००० वर्ष।

(४) ज०से ओघ० पहेला गमा सादृश परन्तु लेश्या तीन स्थिति और अनुबन्ध अन्तरमहुर्त अध्यवसाय अप्रसस्थ।

(५) ज०से जघन्य, चोथा गमाकी माफीक।

(६) ज०से उत्कृष्ट–पांचमा गमा माफीक परन्तु भव ज० दोय. उ० आठ भव करे काल ज० अन्तर महुर्त और २२००० वर्ष उ० च्यार अन्तर महुर्त उ० ८८००० वर्ष।

(७) उ०से ओघ–तीजा गमा माफीक यहांपर स्थिति. ज० उ० २२००० वर्षकि।

(८) उ०से जघन्य। ज० उ० अन्तरमहुर्तमें उपजे. भव ज० २ उ० ८ भव काल ज० २२००० वर्ष अन्तर महूर्त. उ० ८८००० वर्ष च्यार अन्तर महुर्त। - .

(९) उ० से उत्कृष्ट=स्थिति ज० उ० २२००० वर्ष, भव० दोय उ० आठ करे काल ज० ४४००० वर्ष, उ० १७६००० वर्ष।

इस नौ गमोंके अन्दर ३–६–७–८–९ इस पांच गमोंके अन्दर जघन्य दोयभव उ० आठ भव करे शेष १–२–४–५ इस च्यार गमोंमें जघन्य दोय भव उ० असंख्याते भव करे। काल ज० दोय अन्तर महुर्त उ० असंख्याते काल तक परिभ्रमन करे।

अपकाय मरके पृथ्वीकायके अन्दर उत्पन्न होवे उस्काभि नौ गमा और ऋद्धिके २० द्वार पृथ्वीकायकि माफीक समझना। परंतु संस्थान छेवटा पाणीके बुद बुदेके आकार तथा गमामें अपकायकि स्थिति उ० ७००० वर्षकि समझना।

एवं तेउकाय परन्तु संस्थान सूचिकलाइका स्थिति उ० तीन अहोरात्रीकि एवं वायुकाय परन्तु संस्थान ध्वजा पताका और स्थिति उ० ३००० वर्ष वनास्पिति कायका अलापक अपकाय माफीक समझना परन्तु विशेष (१) संस्थान,·नानाप्रकारका,- (२) अवगाहाना १-२-३-७-८-९ इस छे गमामें ज० अंगुलके असंख्यातमें भाग उ० साधिक हजार जोजनकि और ३-५-६ इस तीन गमामें ज० उ० अंगुलके असंख्यातमें भाग अवगाहाना तथा स्थिति उ० दश हजार वर्षसे गमा लगा लेना।

(८) उ०से जघन्य। ज० उ० अन्तरमहुर्तमें उपजे. भव ज० २ उ० ८ भव काल ज० २२००० वर्ष अन्तर महूर्त. उ० ८८००० वर्ष च्यार अन्तर महुर्त।

(९) उ० से उत्कृष्ट=स्थिति ज० उ० २२००० वर्ष, भव० दोय उ० आठ करे काल ज० ४४००० वर्ष, उ० १७६००० वर्ष।

इस नौ गर्मोके अन्दर ३–६–७–८–९ इस पांच गर्मोके अन्दर जघन्य दोयभव उ० आठ भव करे शेष १–२–४–५ इस च्यार गर्मोमें जघन्य दोय भव उ० असंख्याते भव करे। काल ज० दोय अन्तर महुर्त उ० असंख्याते काल तक परिभ्रमन करे।

अपकाय मरके पृथ्वीकायके अन्दर उत्पन्न होवे उस्काभि नौ गमा और ऋद्धिके २० द्वार पृथ्वीकायकि माफीक समझना परंतु संस्थान छेवटा पाणीके बुद बुदेके आकार तथा गमामें अपकायकि स्थिति उ० ७००० वर्षकि समझना।

एवं तेउकाय परन्तु संस्थान सूचिकलाइका स्थिति उ० तीन अहोरात्रीकि एवं वायुकाय परन्तु संस्थान ध्वजा पताका और स्थिति उ० ३००० वर्ष वनास्पिति कायका अलापक अपकाय माफीक समझना परन्तु विशेष (१) संस्थान, नानाप्रकारका, (२) अवगाहाना १-२-३-७-८-९ इस छे गमामें ज० अंगुलके असंख्यातमें भाग उ० साधिक हजार जोजनकि और ४-५-६ इस तीन गमामें ज० उ० अंगुलके असंख्यातमें भाग अवगाहाना तथा स्थिति उ० दश हजार वर्षसे गमा लगा लेना।

ाहाना उत्कृष्ट तीन गाउकि और स्थिति अनुबन्ध उ० गुणपचास
दिन शेष बेन्द्रिय माफीक २० द्वार ऋद्धिका तथा नौगमा लगा
केना।

चौरिद्रिय भी बेन्द्रिय माफीक परन्तु अवगाहाना च्यारगाउ
और स्थिति तथा अनुबन्ध उ० छे मासका है शेष पूर्ववत्।

एव असन्नी तीर्यंच पांचेन्द्रिय भी समझना परन्तु शरीर
अवगाहाना उत्कृष्ठ १००० जोजनकि इन्द्रिय पाच. स्थिति तथा
अनुबन्ध उ० कोडपूर्वका भवापेक्षा ज० दोयभव उ० आठ भव०
कालापेक्षा. ज० दोय अन्तरमहुर्त. उ० च्यार कोऽपूर्व और
८८००० वर्ष अधिक शेष ऋद्धि तथा नौ गमा बेन्द्रिय माफीक
समझना परन्तु गमामें स्थिति पृथ्वीकाय और असन्नी तीर्यंच
पाचेन्द्रिय कि केहना।

संज्ञी तीर्यंच पाचेन्द्रिय संख्याते वर्ष वाला पृथ्वीकायमें
उत्पन्न होवे तो० ज० अन्तरमहुर्त उ० कोडवर्षकि स्थितिवाला
उत्पन्न होगा ऋद्धि.

(१) उत्पात–संज्ञी तीर्यंच पाचेन्द्रिय संख्याते वर्षवालासे।

(२) परिमाण–ज० १–२–३ उ० संख्याते असंख्याते।

(३) सहनन–छे वों संहननवाला।

(४) अवगाहाना–ज० अंगुलके असंख्याते भागउ० १०००
जोजनवाला।

(५) संस्थान–छे वों (६) लेश्या छे वों (७) दृष्टि तीनों.

असंज्ञी मनुष्य मरके पृथ्वीकायमें ज० अन्तर महुर्त उ०
२००० वर्षकि स्थितिमें उत्पन्न होता है. ऋद्धि स्वयं उपयोगसे
हना सुगम है। नौ गमोंके बदले यहांपर ४–५–६ तीन गमा
हना कारण असंज्ञी मनुष्य अपर्याप्ती अवस्थामें ही मृत्यु प्राप्त
ो जाते है वास्ते अपना जघन्य कालसे तीन गमा होता है शेप
ऽ गमा सून्य है।

संज्ञी मनुष्य संख्यात वर्षवाला पृथ्वीकायमें ज० अन्तरमहुर्त
उत्कृष्ट २२००० वर्षोंकि स्थितिमें उत्पन्न होता है. ऋद्धिके
२० द्वार जेसे रत्नप्रभा नरकमें मनुष्य उत्पन्न समय कही थी
इसी माफीक केहना तफावत गमामें है सो कहते है।

(३) प्रथम दुसरा तीसरा गमाके नाणन्ता।

(१) अवगाहना ज० अगुलके असं० भाग उ० ५००
धनुष्य।

(२) आयुष्य ज० अन्तर० उ० पूर्वकोडका।

(३) अनुबन्ध आयुष्यकिमा फीक।

(३) मध्यम गमा तीन ४–५–६ तीर्यंच पांचेन्द्रिय माफीक।

(३) उत्कृष्ट गमा तीन ७–८–९ नाणन्ता तीन तीन।

(१) अवगाहाना ज० उ० ५०० धनुष्यकि।

(२) आयुष्य ज० उ० कोड पूर्वका।

(३) अनुबंध आयुष्यकि माफीक।

नौ गमाका काल मनुष्यकि ज० उ० स्थिति तथा पृथ्वी
कायकि ज० उ० स्थितिसे लगालेना। रीति सब पूर्वे लिखी
हुई है।

पृथ्वीकायके अन्दर च्यारो निकायके देवता उत्पन्न होते है यथा भुवनपतिदेव, व्यन्तरदेव, ज्योतीषीदेव, वैमानिकदेव, जिसमें भुवनपतिदेव दश प्रकारके है यथा असुरकुमार यावतस्तनत कुमार।

असुर कुमारके देव पृथ्वी कायमें ज० अंतर महुर्त उ० २२००० वर्षोंकि स्थितिमें उत्पन्न होते है, जिसकी ऋद्धि।

(१) उत्पात–असुरकुमार देवतावोंसे।

(२) परिमाण–ज० १-२-३ उ० संख्याते असंख्याते।

(३) संहनन–छे वों संहननसे असंहननी है।

(४) अवगाहाना भवं धारणी ज० अंगुलके असंख्यातमें भाग उ० सात हाथ उत्तर वैक्रय करे तो ज० अंगुलके संख्यातमें भाग उ० सधिक लक्ष जोजनकि यह भव संवन्धी अपेक्षा है।

(५) सस्थान–भवधारणी समचतुस्र. उत० नानाप्रकारका।

(६) लेश्या च्यार (७) दृष्टी तीन (८) ज्ञान तीन अज्ञान तीन कि भजना (९) योगतीन (१०) उपयोग दोय (११) संज्ञाच्यार (१२) कषाय च्यार (१३) इन्द्रिय पांच (१४) समुदघात पांचक्रमसर (१५) वेदना दोनों (१६) वेद दोय. स्त्रिवेद, पुरुष वेद. (१७) स्थिति ज० १०००० वर्ष. उ० साधिक सागरोपम. (१८) अनुवन्ध स्थिति माफिक (१९) अध्यवसाय, असं० प्रसस्थ, अप्रसस्थ दोनों (२०) संभइ भवापेक्षा ज० दोय भव उ० दोय भव कारण देवता पृथ्वीकायमें उत्पन्न होते है परन्तु पृथ्वी कायसे पीछा देवता नहीं होते है वास्ते एक भव पृथ्वी कायका दुसरा देवतोंका कालापेक्षा ज० अन्तर महुर्त और दश हजार वर्ष उ० २२००० वर्ष और साधिक सागरोपम इतना काल तक गमनागमन करे० जिस्के गमा नौ।

गमा ९	जघन्य दोयभव	उत्कृष्ट दोयभव
ओघसे ओघ	१०००० वर्ष	साधिक सागरोपम
१	अन्तरमहुर्त	२२००० वर्ष
ओघसे जघन्य	१०००० वर्ष	साधिक सागरोपम
२	अन्तरमहुर्त	अन्तरमहुर्त
ओघसे उत्कृष्ट	१०००० वर्ष	साधिक सागरोपम
३	२२००० ,,	२२००० वर्ष
जघन्यसे ओघ	१०००० वर्ष	१०००० वर्ष
४	अन्तरमहुर्त	२२००० ,,
जघन्यसे जघन्य	१०००० वर्ष	१०००० वर्ष
५	अन्तरमहुर्त	अन्तरमहुर्त
जघन्यसे उत्कृष्ट	१०००० वर्ष	१०००० वर्ष
६	२२००० ,,	२२००० ,,
उत्कृष्टसे ओघ	साधिक सागरोपम	साधिक सागरो०
७	२२००० वर्ष	२२००० वर्ष
उत्कृष्टसे जघन्य	साधिक सागरो०	साधिक सागरो०
८	अन्तरमहुर्त	अन्तरमहुर्त
उत्कृष्टसे उत्कृष्ट	साधिक सागरो०	साधिक सागरो०
९	२२००० वर्ष	२२००० वर्ष

एव नागादि नौ जातिके भुवनपतिका अलापक भि समझना परन्तु स्थिति अल्पबन्ध तथा गमाके फार्मे नं० [illegible] देखोनी शेष पर्योजन समझना।

एवं व्यन्तर देवतावोंका अलापक परन्तु स्थिति अनुबन्ध और गमाकाल सब स्थानमें, ज० दशहजार वर्ष उ० एक पल्योपम समझना ।

इसी माफीक ज्योतीपी देवतावों भि समझना । परन्तु ज्योतीषीयोंके पांच भेद है जिन्होंकि स्थिति—

(१) चन्द्र देवोंकी ज० पावपल्योपम उ० एक पल्योपम और एक लक्ष वर्ष अधिक समझना ।

(२) सूर्यदेवोंकी ज० पाव० उ० एक पल्यो० हजार वर्ष

(३) ग्रहदेवोंकी ज० पाव० उ० एक पल्योपम ।

(४) नक्षत्रदेवोंकी ज० पाव० उ० आदेपल्योपम ।

(५) तारादेवोंकी ज० $\frac{1}{8}$ उ० $\frac{1}{4}$ ।

ज्योतीपीदेव चवके पृथ्वी कायमें ज० अन्तरमहुर्त उ० २२००० वर्षकि स्थितिमें उत्पन्न होते है जिसके ऋद्धिके २० द्वार असुर कुमारकि माफीक परन्तु—

(१) लेश्या एक तेजसलेश्यावाला ।

(२) ज्ञान तीन तथा अज्ञान तीन कि नियमा ।

(३) स्थिति जघन्य $\frac{1}{8}$ उ० एक पल्यो० लक्ष वर्ष ।

(४) अनुबन्ध स्थितिकि माफीक ।

(५) संभहों, ज० दोय भव उ० दोयभव, काल ज० पल्योपमके आठवे भाग और अन्तर महुर्त उ० एक पल्योपम उपर एक लक्ष बावीसहजार वर्ष आधिक । नौ गमा पूर्ववत् लगा लेना परन्तु स्थिति ज्योतीपी देव और पृथ्वी कायकि समझना

वैमानिकसे सुधर्म देवलोकके देवता चवके पृथ्वीकायमे ज०
ान्तर महुर्त उ० २२००० वर्षों कि स्थितिमें उत्पन्न होते है।
रन्तु स्थिति, अनुबन्ध तथा गमाका काल. ज० एक पल्योपम
ःतर दोय सागरोपमका समझना। इसी माफीक, ईशांन देवलोकके
ःवता चवके पृथ्वीकायमें उत्पन्न होते है परन्तु यह ज० एक
ाल्योपम साधिक उ० दोय सागरोपम साधिक समझना। शेष २०
ःार ऋद्धिका तथा नौ गमा पूर्ववत् लगालेना इति।

इति चौवीसवा शतकका बारहवा उदेशा।

(१३) अप कायका तेरहवा उदेशा—जेसे पृथ्वी कायका
उदेशा कहाहै इसी माफीक अपकाय भी समझना परन्तु पृथ्वी
कायकि स्थिति उ० २२००० वर्ष कि थी परन्तु यहा अपकायकि
स्थिति ७००० वर्ष कि समझना गमाके कालमें ७००० वर्षसे
गमा कहना शेष पृथ्वीवत् इति। २४–१३।

(१४) तेउकायका चौदवा उदेशा—अधिकार पृथ्वीकाय
माफीक समझना परन्तु देवता चवके तेउकायमें उत्पन्न नहीं
होते है और स्थिति तेउकायकि उ० तीन अहोरात्रीकी है. शेषा-
धिकार पृथ्वी कायवत् २४–१४

(१५) वायुकायका पन्दरवाउदेशा यह भी पृथ्वीकाय
माफीक है परन्तु देवता नहीं आवे· स्थिति ३००० वर्ष किसे
गमाका काल समझना शेष पृथ्वीकायवत् इति २४–१५

(१६) वनस्पति कायका शोलवा उदेशा—यह भी पृथ्वीका-
यवत् इस्में देवता उत्पन्न होते है। स्थिति उ० १०००० वर्ष

व्यंतर, ज्योतीषी, सौधर्म देवलोकसे यावत् आठवां सहस्र देवलोकके देवता, पांच स्थावर, तीन वैकलेन्द्रिय, तीर्यंच पांचेन्द्रिय स्थानके जीव मरके तीर्यंच पांचेद्रियमें ज० अन्तरमहुर्त और मनुष्य इतने उ० कोडपूर्वकि स्थितिमें उत्पन्न होते है। जिस्में प्रथम रत्नप्रभा नरकेके नेरिया मरके तीर्यंच पांचेन्द्रियमें ज० अन्तरमहुर्त उ० कोडपूर्वकि स्थितिमें उत्पन्न होते है जिस्की ऋद्धि इस माफीक है।

(१) उत्पात—रत्नप्रभा नरकसे।

(२) परिमाण—एक समयमे १—२—३ उ० सख्य असंख्य।

(३) संहनन—छे संहननसे असंहनन अनिष्ट पुद्गल।

(४) अवागहाना—भवधारणी ज० अगु० असं० भाग० उ० ७॥। धनुष्य ६ अगुल० उत्तर वैक्रय ज० अंगु० संख्य० भाग० उ० १५॥ धनु० १२ अंगुल यह सर्व भवापेक्षा है।

(५) सस्थान० भवधारणी तथा उत्तरवैक्रय एकहुन्डक संस्थान।

(६) लेश्या एक कापोत (७) दृष्टी तीनों।

(८) ज्ञान, तीन ज्ञानकि नियमा तीन अज्ञानकि भजना।

(९) योग तीनों (१०) उपयोग दोनों (११) संज्ञाच्यारों।

(१२) कपाय च्यारों (१३) इन्द्रि पांचोवाला।

(१४) समुद्घात च्यार कम.सर।

(१५) वेदना साता असाता (१६) वेद एक नपुंसक।

(१७) स्थिति ज० १०००० वर्ष उ० एक सागरोपम।

(१८) अनुवन्ध स्थिति माफीक।

(१९) अध्यवसाय असंख्याते प्रसस्थ अप्रसस्थ।

मध्यम गमा तीन ४-५-६ जिस्मे स्थिति तथा अनुबन्ध जघन्य उत्कृष्ट दश हजार वर्षका है।

उत्कृष्ट गमा तीन ७-८-९ जिस्मे स्थिति तथा अनुबन्ध जघन्य उत्कृष्ट एक सागरोपमका है।

एवं छट्ठी नरक तक परन्तु अवगाहाना लेश्या स्थिति अनुबन्ध अपने अपने स्थानकि कहना गमा सब स्थानपर अपनि २ स्थितिसे लगा लेना शेष रत्नप्रभा नरकवत समझना।

सातवी नरकके नैरिया मरके तीर्यच पांचेन्द्रियमें ज० अन्तर महुर्त उ० कोडपूर्व कि स्थितिमें उत्पन्न होते है जिस्के ऋद्धिके २० द्वार रत्नप्रभाकि मापीक परन्तु अवगाहाना भव धारिणी ज० अंगुलके असंख्याते भाग उ० ५०० धनुष्य उत्तर वैक्रय ज० अंगु० संख्यातमें भाग उ० १००० धनुष्य लेश्या एक कृष्ण स्थिति ज० २२ सागरो० उ० ३३ सागरोपमकि अनुबन्ध स्थिति मापीक। भवापेक्षा ज० दोय भव उ० ६ भव करे। कालापेक्षा ज० बावीस सागरोपम अन्तरमहुर्त अधिक उ० छासट (६६) सागरोपम तीन कोडपूर्व अधिक। यह प्रथमके ६ गमाकि अपेक्षा है और ७-८-९ इन तीन गमाकि अपेक्षा ज० दोय भव उ० च्यार भव करे कारण सातवी नरकके उ० दोय भवसे अधिक न करे। कालापेक्षा ज० तेतीस सागरोपम अन्तर महुर्त, उ० ६६ सागरोपम दोय कोडपूर्व अधिक [illegible] पूर्ववत लगा लेना (पूरा है।)

[illegible] नरके तीर्यच पांचेन्द्रियमें ज० अन्तर महुर्त उ० कोडपूर्वकि स्थितिमें उत्पन्न होते है जिस्के [illegible]

२० द्वार अपने अपने स्थानसे और नौ गमा अपने अपने कालसे लगा लेना, पृथिव्यादिके स्थानमें प्रथम तीर्यंच पांचेंद्रिय गमा था इसी माफीक यहा भि समझ लेना।

तीर्यंच पांचेंद्रियका दंडक एक है परन्तु इस्में (१) संज्ञी तीर्यंच पांचेंद्रिय (२) असंज्ञी तीर्यंच पांचेंद्रिय, जिस्मे भि संज्ञी तीर्यंच पांचेंद्रियका दोय भेद है (१) संख्याते वर्षवाले (कर्मभूमि) (२) असंख्याते वर्षवाले युगलीया। यहांपर वीसवादंडक समुच्चय तीर्यंच पांचेंद्रियका चल रहा है जिस्मे च्यारों भेद समझ लेना, संज्ञी, असंज्ञी, कर्मभूमि, अकर्मभूमि.

असंज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रिय मरके तीर्यंच पांचेन्द्रियके दंडकमें ज० अन्तरमहुर्त उ० पल्योपमके असंख्यातमें भागकि स्थितिमें उत्पन्न होता है। ऋद्धिके २० द्वार जैसे पृथ्वीकायमें उत्पन्न समय कहा था इसी माफीक समझना। भवापेक्षा ज० दोय भव० उ० दोयभव० कालापेक्षा ज० दोय अन्तरमहुर्त उ० पल्योपमके असंख्यातमें भाग और कोडपूर्व जिस्के गमा नौ इस मुजब।

(१) गमे भव ज० दोय० उ० २ काल ज० दोय अन्तरमहुर्त, उ० पल्यो० असं० भाग और कोडपूर्व.

(२) गमे—भव ज० दोय० उ० ८ काल ज० दोय अन्तर उ० च्यार कोडपूर्व और च्यार अंतरमहुर्त।

(३) गमे—परिमाणादि रत्नप्रभावत्. भव ज० उ० २ काल ज० पल्यो० असं० भाग अन्तरमहुर्त, उ० पल्योपमके असं० तमें भाग और कोडपूर्व अधिक।

(३) गमें ज० उ० तीन पल्योपमकि स्थितिमें उत्पन्न होवे परिमाण १-२-३ उ० संख्याते जीव उत्पन्न होते है। अवगाहाना पूर्ववत् भव ज० दोय उ० दोय भव करे काल ज० अन्तर महुर्त और तीन पल्योपम उ० तीन पल्योपम और कोडपूर्व।

• (४-५-६) इस तीन गमाकि ऋद्धि तीर्यंच पांचेन्द्रिय जो पृथ्वीकायमें गया था उस माफीक भव ज० दोयभव उ० आठ भव करे काल चोथे गमें अन्तरमहुर्त कोडपूर्व उ० च्यार अन्तर महुर्त और च्यार कोडपूर्व, पांचवे गमें ज० दोय अन्तरमहुर्त उ० आठ अन्तरमहुर्त, छटे गमें कोडपूर्व और अन्तरमहुर्त उ० च्यार कोडपूर्व और च्यार अन्तरमहुर्त।

(७) सातवे गमें ज० उ० कोडपूर्ववाला जावे भव ज० उ० दोय करे काल ज० कोडपूर्व और अन्तरमहुर्त उ० तीन पल्योपम और कोडपूर्व।

(८) गमें भव ज० दोय० उ० आठ भव काल ज० कोड पूर्व अन्तरमहुर्त उ० च्यार कोडपूर्व और च्यार अंतरमहुर्व।

(९) गमें परिमाण स्थिति अनुबंध तीसरे गमेंकि माफीक भव ज० उ० दोयभव करे काल तीन पल्योपम और कोडपूर्व उ० तीन पल्योपम और कोडपूर्व। तथा असंख्याते वर्षके तीर्यच युगलीये होते है वास्ते वह मरके तीर्यचमें नहीं जाते है उन्होंकि गति केवल देवलोकि ही है वास्ते यहा उत्पात नहीं है। इति।

मनुष्य संज्ञी तथा असंज्ञी दोय प्रकारके होते है जिस्में असंज्ञी मनुष्य मरके तीर्यंच पाचेन्द्रियमें ज० अंतरमहुर्त उ०

ी गमा पूर्व पृथ्वीकाय तीर्थंच पाचेन्द्रियमें उत्पन्न समय कहा था सी माफीक कहना परन्तु तीसरे छटे नौमें गमामें परिमाण १-२-३ उ० संख्याते समझना और प्रथम गमे पृथ्वीकाय अपने जघन्य काळमें अध्यवसाय प्रशस्थ अप्रशस्थ दोनों होते है दुसरेगमे अप्रशस्थ तीसरे गमें प्रसस्थ शेष तीर्थंच पाचेन्द्रिय माफीक है एवं अपकाय वनास्पतिकाय वेन्द्रिय. तेन्द्रिय. चेरिन्द्रिय, असंज्ञी तीर्थंच पाचेन्द्रिय संज्ञी तीर्थंच पाचेन्द्रिय, असंज्ञी मनुष्य संज्ञी मनुष्य यह सब जेसे तीर्थंच पाचेन्द्रियके दंडकमें उत्पन्न समय ऋद्धि तथा गमा कहा था इसी माफीक समझना परन्तु परिमाण स्थिति अनुबन्धादि अपने अपने स्थानसे कहना।

असुर कुमारके देव चवके मनुष्यमें ज० प्रत्यक मास उ० क्रोडपूर्वकि स्थितिमें उत्पन्न होते है ऋद्धिके २० द्वार जेसे तीर्थंच पांचेन्द्रियमें उत्पन्न समय कहा था इसी माफक कहना परन्तु परिमाणमें १-२-३ उ० संख्याते कहना। और गमामें तीर्थंचका जहा जघन्य अन्तर महूर्तका, काल. कहा था वह यहां (मनुष्यमें) प्रत्यक मासका कालसे गमा कहना। एवं दश भुवनपति व्यन्तर ज्योतीषी सौधर्म इशांन देवलोक तक और तीजे देवलोकसे नौ ग्रीवैग तकके देव मनुष्यमें ज० प्रत्यक वर्ष और उ० क्रोडपूर्वमें उत्पन्न होते है ऋद्धिके २० द्वार सदुपयोगसे कहना कारण इस दंडक कण्ठस्थ करनेवालोंको बहुत ही सुगम है वास्ते यहा नहीं लिखा है नाणन्ते और गमा तथा सबके लिये प्रथम उद्देशेमें विस्तारसे लिख आये है। इतना ध्यानमें रखना कि नौग्री वैगमें अवगाहाना तथा संस्थान एक भव धारणी है समुद्घात प्रथ

गमा पूर्व पृथ्वीकाय तीर्यंच पाचेन्द्रियमें उत्पन्न समय कहा था सी माफीक कहना परन्तु तीसरे छटे नौमें गमामें परिमाण १-२-३ उ० संख्याते समझना और प्रथम गमे पृथ्वीकाय अपने जघन्य कालमें अध्यवसाय प्रसस्थ अप्रसस्थ दोनों होते है दुसरेगमे अप्र-सस्थ तीसरे गमें प्रसस्थ शेष तीर्थच पाचेन्द्रिय माफीक है एवं अपकाय वनास्पतिकाय बेन्द्रिय. तेन्द्रिय. चौरिन्द्रिय, असंज्ञी तीर्थच पाचेन्द्रिय संज्ञी तीर्थच पाचेन्द्रिय, असज्ञी मनुष्य संज्ञी मनुष्य यह सब जेसे तीर्थच पाचेन्द्रियके दंडकमें उत्पन्न समय ऋद्धि तथा गमा कहा था इसी माफीक समझना परन्तु परिमाण स्थिति अनुबन्धादि अपने अपने स्थानसे कहना ।

असुर कुमारके देव चवके मनुष्यमें ज० प्रत्यक मास उ० कोडपूर्वकि स्थितिमें उत्पन्न होते है ऋद्धिके २० द्वार जेसे तीर्थच पांचेन्द्रियमें उत्पन्न समय कहा था इसी माफक कहना परन्तु परिमाणमें १—२—३ उ० संख्याते कहना । और गमामें तीर्थचका जहा जघन्य अन्तर महूर्तका, काल, कहा था वह यहां (मनुष्यमें) प्रत्यक मासका कालसे गमा कहना । एवं दश भुव-नपति व्यन्तर ज्योतीषी सौधर्म ईशांन देवलोक तक और तीजे देवलोकसे नौ ग्रीवेग तकके देव मनुष्यमें ज० प्रत्यक वर्ष और उ० कोडपूर्वमें उत्पन्न होते है ऋद्धिके २० द्वार स्वउपयोगसे कहना कारण इस दंडक कण्ठस्थ करनेवालोंको बहुत ही सुगम है वास्ते यहा नहीं लिखा है नाणत्ते और गमा तथा सबके लिये प्रथम थोकडेमें विस्तारसे लिख आये है । इतना ध्यानमें रखना कि नौमी वेगमें अवगाहाना तथा संस्थान एक भव धारणी है समुद्घात प्रथम

वे पांच है परन्तु वैक्रय और तेजस करते नहीं है। देवलोक तक ज० दोय भव उ० आठ भव करते है अगतु नौवा देवलोकके देव चवके मनुष्यमें ज० प्रत्यक वर्ष उ० कोडपूर्वकि स्थितिमें उत्पन्न होते है। भव ज० दोय उ० छे। का ज० अठारा सागरोपम प्रत्यक वर्ष उ० सतावन सागरोपम तीन कोडपूर्व इसी माफीक नौ गमा परन्तु ऋद्धि सब देवलोकके स्थान कहना इसी माफीक दशवा, इग्यारवा, बारहवा देवलोक और ग्रीवेगन भी कहना स्थिति गमा उपयोगसे लगा लेना। ऋद्धि २० द्वार प्रत्यक स्थानपर कहना चाहिये।

विजय वैमानके देव मनुष्यमें ज० प्रत्यक वर्ष उ० कोड स्थितिमें उत्पन्न होते है। परन्तु अवगाहाना एक हाथ दृष्टि सम्यग्दृष्टी, ज्ञानतीन, स्थिति ज० ३१ सागरोपम, उ० ३३ सागरोपम शेष ऋद्धि पूर्ववत् भव ज० दोय उ० च्यार भव, काल ज० ३१ सागरोपम प्रत्यक वर्ष उ० ६६ सागरोपम, दोय कोड अधिक इसी माफीक शेष आठ गमा भी समझना। एवं विजय जयन्त, अपराजित वैमान भी समझना। तथा सर्वार्थसिद्धि वैमान वाले देव ज० दोयभव, उ० भि दोयभव करते है यह ७-८-९ तीन होगा काल

(७) गमें काल तेतीस सागरोपम प्रत्यक वर्ष

(८) गमें काल ,, ,, ,,

(९) गमें काल ,, ,, कोटपूर्व

शेष छे गमा टुट जाते है कारण सर्वार्थसिद्ध वैमानमे उ० तेतीस सागरोपम कि ही स्थिति है। इति १९-२१।

(२२) वाणमित्र (व्यन्तर) देवतों का उद्देशा-संज्ञो तीर्यच असज्ञी तीर्यच संज्ञो मनुष्य तथा मनुष्य तीर्यच युगलीया मरके व्यन्तर देवतावोंमें ज० दश हजार वर्ष उ० एक पल्योपमकि स्थितिमें उत्पन्न होता है इसकि २० द्वारकि ऋद्धि तथा नौ गमा नागकुमारकि माफीक समझना तथा युगलीया उत्कृष्ट स्थितिवाला भी व्यन्तर देवोंमें जावेगा तो एक पल्योपमकि स्थिति पावेगा अधिक स्थितिका अभाव है। इति २४-२२

(२३) ज्योतीषी देवोंका उद्देशा-संज्ञी तीर्यच संज्ञी मनुष्य और मनुष्य तीर्यच युगलीये मरके ज्योतीषी देवतोंमें ज० पल्योपमके आठ वे भाग उ० एक पल्योपम एक लक्ष वर्षकि स्थितिमे उत्पन्न होते है। विवरण-

असंख्यात वर्षके संज्ञी तीर्यच पाचेन्द्रिय, मरके ज्योतीषी देवतावोंमें उत्पन्न होते है परंतु आपनि स्थिति ज० पल्योपमके आठ वे भाग उत्कृष्ट तीन पल्योपमवाले वहा ज्योतीषीयोंमें ज० $\frac{1}{8}$ उ० एक पल्यो० लक्ष वर्ष अधिक। शेष ऋद्धि असुरकुमार कि माफीक एक भव ज० उ० दोय भव करे जिसके नौ गमा।

(१) गमें पल्यो० $\frac{1}{8}$ उ० च्यार पल्यो० लक्ष वर्ष।

(२) गमे „ $\frac{1}{8}$ उ० तीनपल्यो० $\frac{1}{8}$ अधिक।

(३) गमें दोय पल्यो० दो लक्ष वर्ष उ० ४ प० लक्ष वर्ष।

(४) गमें, ज० उ० पावपल्यो० परन्तु अवगाहाना ज० प्रत्येक धनुष्य उ० १८०० धनुष्य साधिक।

(५-६) यह दोय गमा छुट जाते है=शुन्य है। कारण

चेन्द्रिय मरके सौधर्म देवलोकमें ज० एक पल्योपम उ० तीन ल्योपमकि स्थितिमें उत्पन्न होते है। वह समदृष्टी, मिथ्या ष्टी, दोनों प्रकारके और दोय ज्ञान दोय अज्ञानवाले, स्थिति ज० क पल्योपम उ० तीन पल्योपम एवं अनुबन्ध भी समझना। शेष ज्योतीषीयोंके माफीक. भव ज० उ० दोय करे काळ ज० दोय ल्योपम उ० छे पल्योपम। नौ गमा।

(१) गमें ज० दोय पल्यो० उ० छे पल्योपम
(२) गमें ज० ,, उ० च्यार पल्योपम
(३) गमें ज० चार पल्योपम उ० छे पल्योपम
(४) गमें ज० दोय पल्योप० उ० दोय पल्योपम अवगाहना
(५) गमें ज० ,, ,, { ज० प्रत्यक मनुष्य उ० दोय गाउ की।
(६) गमें ज० ,, उ० चार पल्योपम
(७) गमें ज० छे पल्यो उ० छे पल्यो०
(८) गमें ज० च्यार पल्यो० उ० च्यार पल्यो०
(९) गमें ज० छे पल्यो० उ० छे पल्यो०

संख्याते वर्षवाले सज्ञी तीर्यच पाचेन्द्रियका अलावा असुरकुमारके माफीक परन्तु मध्यमके ४–५–६ तीन गमामें दृष्टी दोय, ज्ञान दोय, अज्ञान दोय केहना। यह नौ गमा सौधर्म देवलोक और तीर्यच पाचेन्द्रियकि स्थितिसे लगाना।

असंख्याते वर्षवाला मनुष्य जो सौधर्म देवलोकमे उत्पन्न होता है वह सब असंख्याते वर्षके तीर्यचके माफीक सात गमा समझना परन्तु पहले, दुसरे गमामें अवगाहना ज० एक गाउ उ०

पांचेन्द्रिय मरके सौधर्म देवलोकमें ज० एक पल्योपम उ० तीन पल्योपमकि स्थितिमें उत्पन्न होते है। वह समदृष्टी, मिथ्या दृष्टी, दोनों प्रकारके और दोय ज्ञान दोय अज्ञानवाले, स्थिति ज० एक पल्योपम उ० तीन पल्योपम एवं अनुबन्ध भी समझना। शेष ज्योतीषीयोंके माफीक. भव ज० उ० दोय करे काळ ज० दोय पल्योपम उ० छे पल्योपम। नौ गमा।

(१) गमें ज० दोय पल्यो० उ० छे पल्योपम
(२) गमें ज० ,, उ० च्यार पल्योपम
(३) गमें ज० चार पल्योपम उ० छे पल्योपम
(४) गमें ज० दोय पल्योप० उ० दोय पल्योपम अवगाहना
(५) गमें ज० ,, ,, { ज० प्रत्यक धनुष्य उ० दोय गाउ की।
(६) गमें ज० ,, उ० चार पल्योपम
(७) गमें ज० छे पल्यो उ० छे पल्यो०
(८) गमें ज० च्यार पल्यो० उ० च्यार पल्यो०
(९) गमें ज० छे पल्यो० उ० छे पल्यो०

संख्याते वर्षवाले सज्ञी तीर्यच पाचेन्द्रियका असुरकुमारके माफीक परन्तु मध्यमके ४–५–६ तीन गमामें दृष्टी दोय, ज्ञान दोय, अज्ञान दोय केहना। यह नौ गमा सौधर्म देवलोक और तीर्यच पांचेन्द्रियकि स्थितिसे लगाना।

असंख्याते वर्षवाला मनुष्य जो सौधर्म देवलोकमे उत्पन्न होता है वह सब असंख्याते वर्षके तीर्यचके माफीक सात गमा समझना परन्तु पहले, दुसरे गमामें अवगाहना ज० एक गाउ

य तथा सनत्कुमार देवलोककी कहना । यथा—

(१) गमें प्रत्यक वर्ष, दोयसागरो० उ० च्यार कोडपूर्व २८ सागरो०
(२) गमें ,, ,, उ० ४ प्रत्यवर्ष आठ सा०
(३) गमें ,, ,, उ० ४ कोडपूर्व २८ सा०
(४) गमें ,, ,, उ० ४ पु० २८ सा०
(५) गमें ,, ,, उ० ४ प्रत्य० ८ सा०
(६) गमें ,, ,, उ० ४ कोड० २८ सा०
(७) गमें कोडपूर्व सातसागरो० उ० ४ प्र० २८ सा०
(८) गमें ,, ,, उ० ४ प्र० ८ सा०
(९) गमें ,, ,, उ० ४ कोड० २८ सा०

एवं महेद्रदेवलोक, ब्रह्मदेवलोक, लांतकदेवलोक, महाशुक्रदेवलोक, सहस्रारदेवलोक परन्तु गमामें स्थिति अपने अपने देवलोककि जघन्य उत्कृष्टसे गमा बोलना। विशेष है कि लांतकदेवलोकमें संज्ञी तीर्यच पांचेद्रिय उत्पनि ज० स्थितिकालमें लेश्या छवों कहना मनुष्य तथा तीर्यच संहनन पाचवे उठे देवलोकमें पांचसंहननवाला जावे छेवटा वर्जके। सातवा आठवा देवलोकमें च्यार संहननवाला जावे कीलीका संहनन वर्जके ।

अणत नौवा देवलोक,=पंल्याने वर्षवाला संज्ञी मनुष्य मरके नौवा देवलोकमें ज० अठारा सागरोपम उ० उगणीस सागरोपमकि स्थितिमें उत्पन होते है आदि पूर्ववत् परन्तु संहनन तीन ..
भव ज० तीन भव उ० सात भव करे काल ज० अठारा
दोय प्रत्यक सतावन सागरोपम च्यार

(५) गमें	,,	,,	उ० ६२	सा० ३	प्रत्ये०
(६) गमें	,,	,,	उ० ६६	सा० ३	कोड०
(७) गमें कोडपुर्व	२२ सा०		उ० ६६	सा० ३	कोड०
(८) गमें	,,	,,	उ० ६२	सा० ३	प्रत्ये०
(९) गमें	,,	,,	उ० ६६	सा० ३	कोडपुर्व

एवं विजयन्त, जयन्त, अपराजित,

सर्वार्थ सिद्ध वैमानके अंदर संख्याते वर्षवाला सज्ञी मनुष्योत्पन्न होते है वह ज० उ० तेतीस सागरोपमकि स्थितिमें उत्पन्न होते है। ऋद्धि स्व उपयोगसे समझना। गमा ३ तीजा छटा नौवा।

(१) तीजे गमे भव तीन करे काल ज० ३३ सागरोपम दोय प्रत्यक वर्ष अधिक उ० ३३ सा० २ कोडपूर्व०।

(२) छठे गमें भव तीन—काल ३३ सा० दोय प्रत्येक वर्ष उ० ३३ सा० दोय प्रत्येक वर्ष अधिक।

(३) नौवा गमें भव तीन काल ज० उ० ३३ सागरोपम दोय कोडपूर्वाधिक।

अवगाहाना तीजे छठे गमें ज० प्रत्येक हाथकि नौवां गमें ज० उ० पांचसो धनुष्यकि। स्थिति ज० उ० कोटपूर्वकि इति २४—२४

इस गमा शतकमें बहुतसे स्थानपर पूर्वकि भोलामण देते हुवे गमा नहीं लिखा है इसका कारण प्रथम तो हमारा इरादाही कण्ठस्थ करानेका है अगर म्हूदातसे कंठस्थ करेंगे उन्होंके सबके सब गमा कण्ठस्थ ही हो जावगा।

श्री कक्कसूरीश्वरसद्गुरूभ्योनमः

अथश्री

शीघ्रबोध भाग २४वां.

थोकडा नं० १

सूत्र श्री भागवतीजी शतक २१ वां

(वर्ग आठ)

इस इकवीसवां शतकके आठ वर्ग और प्रत्येक वर्गके दश दश उदेशा होनेसे ८० उदेशा है। आठ वर्गके नाम।

(१) शाली=गहु जव ज्वारादिका वर्ग
(२) कलमुग=चीणा मठरादिका ,,
(३) अलसी=कसुंबादिका ,,
(४) वांस=वेत लता आदिका ,,
(५) इक्षु=सेलडी जातिका ,,
(६) डाभ=तृणजातिका ,,
(७) अक्कोहरा=एक जातिके वृक्षमें दूसरि जातिका-[वृक्ष उत्पन्न होना
(८) तुलसी=आदि वेलीयोंका वर्ग

प्रथम शाली आदिके वर्गका मूलादि दश उदेशा है जिस्मे पहला उदेशापर बत्तीसद्वार उतारेगा यथा-

(१) उत्पाद द्वार-शालीके मूलमें कितने स्थानसे जीव आयके उत्पन्न होते है ? तीर्यचके ४६ भेद जेसे तीर्यचके ४८

(७) उदयद्वार—ज्ञानावर्णिय उदयवाला एक ज्ञाना० उदयवाला बहुत एवंयावत अंतराय कर्मका ।

(८) उदिरणाद्वार—आयुण्य और वेदेनिय कर्मोका आठ आठ भांगा शेष छे कर्मोका दो दो भागा पूर्ववंत ।

(९) लेश्याद्वार—शालीके मूलमें जीव उत्पन्न होते है उस्मे लेश्या स्यातकृष्ण स्यातनिल स्यातकापात लेश्या होती है बहुत जीवों अपेक्षा २६ भागा होते है देखो शीघ्र० भाग ८ उत्पेलोधिकार ।

(१०) दृष्टीद्वार दृष्टी एक मिथ्यात्वकि भांगा दोय । एक जीवोत्पन्नापेक्षा एक, बहुत जीवोत्पन्नापेक्षा बहुत ।

(११) ज्ञानद्वार—अज्ञानी एक अज्ञानी बहुत ।

(१२) योगद्वार—काययोगि एक काययोगि बहुत ।

(१३) उपयोगद्वार—साकार अनाकारके भांगा आठ ।

(१४) वर्णद्वार—जीवापेक्षा वर्णादि नही होते है और शरीरापेक्षा पांच वर्ण दोय गंध पांच रस आठ स्पर्श पावे ।

(१५) उश्वासद्वार—उश्वास, निःश्वासा नोउश्वसनोनिश्वास तीन पदके भांगा २६ उत्पलवत ।

(१६) आहारद्वार—आहारीक एक—बहुता एक और बहुतके दो भागा ।

---

१ शीघ्रबोध भाग ८ वामें उत्पल कमलके ३२ द्वार सविस्तार छप गये है वास्ते यहां विषयकि भोलामन दी गई है, देखो आठवा भाग ।

नाम	भव		काल	
	ज०	उ० भव	ज०	उत्कृष्ट काल
च्यार स्थावरमें	२	असंख्या	अन्तरमहूर्त	असंख्या० काल
वनास्पतिमें	२	अनन्ता		अनन्त० ,,
वैकलेन्द्रियमें	२	संख्यात		संख्यात० ,,
तीर्यच पाचेन्द्रिय	२	आठ		प्रत्यक ,,
मनुष्यमें	२	आठ		कोडपूर्व ,,

(२८) आहारद्वार—२८८ बोलोका आहार लेते है ।

(२९) स्थितिद्वार—ज० अन्तरमहूर्त उ० प्रत्यक वर्षकि ।

(३०) समुदघात—वेदनि, मरणति, कषाय एवं तीन ।

(३१) मरण—समोहीय, असमोहीय दोन प्रकारसे ।

(३२) गतिद्वार—मरके ४९ स्थानमें जाते है पूर्ववत ।

(प्र) हे भगवान् सर्व प्राणभृत जीव सत्व, शालीके मूलपणे पूर्वे उत्पन्न हुवे ?

हा गौतम, एक बार नही किन्तु अनन्ती अनन्ती वार उत्पन्न हुवे है । इति ।१।

जेसे यह शालीके मूलका पहला उदेशा कहा है इसी माफीक शालीके कन्द उदेशा, स्कन्धउदेशा, त्वचाउदेशा, साखाउदेशा, परवाल उदेशा, और पत्रउदेशा एवं सातउदेशा सादश है सबपर ३२–३२ द्वार उत्तारना ।

आठवां पुष्प उदेशामें जीव ७४ स्थानोंसे आते है जिस्मे ४९ तो पूर्वे कहा है, दशभुवनपति, आठव्यन्तर, पांच ज्योतीषी,

थोकडा नम्बर २

सूत्र श्री भागवतीजी शतक २२

(वर्ग छे)

इस बावीसवां शतकके छे वर्ग है प्रत्येक वर्गके दश दश
शा होनसे साठ उदेशा होते है । यथा–

(१) ताल तम्बालादि वृक्षका वर्ग
(२) एक फलमें एक बीज आम्र हरडे निंब आदिके वर्ग
(३) एक फलमें बहुत बीज अगत्थीया वृक्ष तंडुक वृक्ष नद- [रिक वृक्षादि ।
(४) गुच्छा वृन्ताकि आदिका वर्ग ।
(५) गुल्म–नवमालती आदिका वर्ग
(६) वेलि–पुंफली, कालिंगी, तुम्बीदि वर्ग

इस छे वर्गसे प्रथम तालतम्बालादि वृक्षके मूल, कन्द, स्कन्ध,
चा, साखा, यह पांच उदेशा शाली वर्गवत कारण इस पाचों
देशोंमे देवता उत्पन्न नही होते है । लेश्या तीन भांगा २६
ते है । स्थिति ज० अन्तर महूर्त उ० दशहजार वर्षोकि है ।
थ परिवाल, पत्र, पुष्प, फल, बीज इस पाच उदेशोमें देवता
के उत्पन्न होते है, लेश्या च्यार भागा ८० होते है । और
थति ज० अन्तर महुर्त उ० प्रत्यक वर्ष की है । अवगाहाना
घन्य अंगुलके असंख्यातमें भाग है उत्कृष्टी मूल कन्दकि प्रत्यक
नुष्यकि, स्कन्ध, त्वचा, सारवा, कि प्रत्यक गाउ० परवाल, पत्र,
के प्रत्यक धनुष्यकि, पुष्पोंकि प्रत्यक हाथ, फल, बीज कि प्रत्यक
अंगुलकि है शेष अधिकार शाली वर्ग माफीक समना ।

इति ... वर्ग ... उद्देशा ।

थोकडा नम्बर ६

श्री भगवती सूत्र शतक २३

(वर्ग पांच)

इस तेवीसवां शतकके पांच वर्ग जिस्के पचास उदेशा है इस शतकमें अनन्त काय साधारण वनास्पतिका अधिकार है साधारण वनास्पतिकायमें जीव अनन्त कालतक छेदन, भेदन, महान् दुःख- सहन कियां है वास्ते इस शतकके प्रारम्भमें " नमो सुयदेवयारा भगवईए " सुत्र देवता भगवतीको नमस्कार करके (१) आलुवर्ग (२) लोहणी वर्ग (३) आवकाय वर्ग (४) पाढमि आदि वर्ग (५) मासपन्नी आदि वर्ग कहा है। (१) आलु मूला आदो हलदी आदिके वर्गका दश उदेशा वास उदेशाकि माफीक है परन्तु परि- माण द्वारमें १–२–३ यावत संख्याते असंख्याते अनन्ते उत्पन्न होते है समय समय एकेक जीव निकाले तों अनन्ती सर्पिणि, उत्सर्पिणि पूर्ण होजाय। स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट अंतर महूर्तकि शेष वांसवर्गवत समझना इति प्रथम वर्ग दश उदेशा समाप्तम्।

(२) लोहनि असकन्नी, वज्रकन्नो, आदिका वर्गके दश उदेशा, आलुवर्गके माफीक परंतु अवगाहाना तालवर्ग माफीक समझना इति समाप्तम्।

(३) आयकाय कहूणी आदि अनन्तकायकी एक जाति है इसके भी १० उदेशा आलुवर्ग माफीक है परतु अवगाहाना ताल वर्ग माफीक समजना इति तीसरा वर्ग समाप्तम्।

(४) पादमि, माहुके मधुरसाग आदि अनंतकायकि एक

थोकडा नम्बर ६

श्री भगवती सूत्र शतक २३

(वर्ग पांच)

इस तेवीसवां शतकके पांच वर्ग जिस्के पचास उदेशा है इस शतकमें अनन्त काय साधारण वनास्पतिका अधिकार है साधारण वनास्पतिकायमें जीव अनन्त कालतक छेदन, भेदन, महान् दुःख-सहन कियां है वास्ते इस शतकके प्रारम्भमें "नमो सुयदेवयारा भगवईए" सुत्र देवता भगवतीको नमस्कार करके (१) आलुवर्ग (२) लोहणी वर्ग (३) आवकाय वर्ग (४) पादमि आदि वर्ग (५) मासपन्नी आदि वर्ग कहा है। (१) आलु मूला आदो हलदी आदिके वर्गका दश उदेशा वास उदेशाकि माफीक है परन्तु परि-माण द्वारमें १—२—३ यावत् सख्याते असंख्याते अनन्ते उत्पन्न होते है समय समय एकेक जीव निकाले तो अनन्ती सर्पिणि, उत्सर्पिणि पुर्ण होजाय। स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट अतर महुर्तकि शेष वांसवर्गवत् समझना इति प्रथम वर्ग दश उदेशा समाप्तम्।

(२) लोहनि असकन्नी, वज्रकन्नो, आदिका वर्गके दश उदेशा, आलुवर्गके माफीक परंतु अवगाहाना तालवर्ग माफीक समझना इति समाप्तम्।

(३) आयकाय कहूणी आदि अमोविन्दकी एक जाति है इसके भी १० उदेशा आलुवर्ग माफीक है परंतु अवगाहाना ताल वर्ग माफीक समजना इति तीसरा वर्ग समाप्तम्।

(४) पादमिद् महुके मधुरसाग आदि० अमोकंदकि एक

है यावत् संख्याते, असंख्याते, आकाश प्रदेश अवगहान किये हुवे पुद्गल अनन्ते हैं।

(३) इस अनादि लोकके अन्दर एक समयकी स्थिति वाले पुद्गल अनन्ते है एवं २–३–४–५–६–७–८–९–१० यावत् संख्याते समयकी स्थिति, असंख्याते समयकि स्थिति वाले पुद्गल अनन्ते हैं।

(४) इस प्रवाह लोकके अन्दर एक गुन काले वर्ण एवं २–३ ४-५-६-७-८-९-१० यावत्संख्याते असंख्याते अनन्ते गुण काले पुद्गल अनन्ते है एवं नीलेवर्ण रक्तवर्ण पीतवर्ण श्वेतवर्ण सुगंध दुर्गन्ध तीक्तरस कटुकरस कषायलेरस खवीलरस मधुरस कर्कशस्पर्श मृदु, गुरु लघु, शीत, उष्ण, रूक्ष, स्निग्ध यह वीसबोलोंके एक गुनसे अनंत गुणतकके पुद्गल अनंते अनन्ते है।

द्रव्यापेक्षा, क्षेत्रापेक्षा, कालापेक्षा, भावापेक्षा, इसी च्यारोंके द्रव्य और प्रदेशापेक्षा अल्पाबहुत्व कहते हैं।

(१) द्रव्यापेक्षा अल्पा०

(१) दो प्रदेशी स्कंध द्रव्यसे परमाणुवोंके द्रव्य बहुत है
(२) तीन प्रदेशी स्कंध द्रव्यसे दो प्रदेशीके द्रव्य बहुत है
(३) च्यार ,, ,, ,, तीन प्र०स्कं० द्रव्य ,,
(४) पांच ,, ,, च्यार ,, ,, ,, ,,
(५) छे ,, ,, पांच ,, ,, ,, ,,
(६) सात ,, ,, छे ,, ,, ,, ,,
(७) आठ ,, ,, सात ,, ,, ,, ,,
(८) नौ ,, ,, आठ ,, ,, ,, ,,

(९) दश „ „ नौ „ „ „ „
(१०) दश „ „ संख्यात „ „ „ „
(११) संख्यात „ „ असं० „ „ „ „
(१२) अनन्त „ „ असं० „ „ „ „

(२) प्रदेशापेक्षा अल्पा०

(१) परमाणुवोंसे दो प्रदेशीके प्रदेश बहुत है ।
(२) दो प्रदेशी स्कंधसे तीन प्र० के प्रदेश बहुत है ।
(३) तीन प्र० स्क० से च्यार प्र० के „ „
(४) च्यार „ „ से पांच प्र० के „ „
(५) पांच „ „ से छे प्र० के „ „
(६) छे „ „ से सात प्र० के „ „
(७) सात „ „ से आठ प्र० के „ „
(८) आठ „ „ से नो प्र० के „ „
(९) नौ „ „ से दश प्र० के „ „
(१०) दश „ „ से संख्याते प्र० के „ „
(११) संख्या „ „ से असंख्या प्र० के „ „
(१२) अनन्त „ „ से असंख्य० प्र० के „ „

(३) क्षेत्रापेक्षा द्रव्योंकि अल्पा० दोय आकाश प्रदेश अवगाह्ये द्रव्योंसे, एकाकाश प्रदेश अवगाह्ये द्रव्य बहुत है एव यावत् दशाकाश अवगाह्ये द्रव्योंसे नौ आकाश अवगाह्ये द्रव्य बहुत है। दशाकाश अवगाह्ये द्रव्यसे संख्याता काश अवगाह्ये द्रव्य बहुत है। संख्या ० अवगाह्यसे असंख्याताकाश अवगाह्ये द्रव्य बहुत है।

(४) क्षेत्रापेक्षा प्रदेशकि अल्पा० एकाकाश अवगाह्ये प्रदेशसे

दो आकाश अवगाह्ये प्रदेश बहुत है एवं यावत नौ अव० से दशाकाश अवगाह्ये प्रदेश बहुत है, दशाकाश अवगाह्यसे संख्यात आकाश प्रदेश अवगाह्य प्रदेश बहुत, संख्यात० से असंख्याते प्रदेश अवगाह्ये प्रदेश बहुत है ।

(५—६) कालापेक्षा द्रव्य और प्रदेशकी अल्पा बहुत्व क्षेत्रकि माफिक समझना ।

(७—८) भावापेक्षा द्रव्य और प्रदेशकि अल्पाबहुत्व पांच वर्ण दोयगंध पांच रस और चार स्पर्श एवं १६ बोलोकि अल्पा० परमाणुकी माफीक अर्थात द्रव्यकि नं० १ प्रदेशकि नं० २ माफीक समझना और कर्कशस्पर्शकि अल्पा बहुत यथा= एक गुण कर्कश स्पर्शसे दो गुण कर्कश स्पर्श के द्रव्य बहुत है एवं नौ गुणसे दश गुणके द्रव्य बहुत, दश गुणसे संख्यात गुणके बहुत, संख्यात गुणोंसे असंख्यात गुणके बहुत, असंख्यात गुण कर्कश स्पर्शके द्रव्यों से अनन्त गुण कर्कश स्पर्शके द्रव्य बहुत है । इसी माफीक प्रदेशकी भी अल्पा० समझना एवं मृदुस्पर्श, गुरुस्पर्श, लघुस्पर्श भी समझना इति ।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नम्बर ९

सूत्र श्री भगवतीजी शतक २५ उद्देशा ५

(कालधिकार)

(प्र० हे भगवान्! एक आवलिकामें क्या संख्याते समय होते हैं ? असंख्याते समय होते है ? अनन्ते समय होते है ?

है और (४८) एक पुद्गल प्रवर्तनमें संख्यात समय नहीं असंख्यात समय नहीं किन्तु अनन्त समय होते है (४९) एवं भूतकालमें (५०) एवं भविष्य कालमें (५१) एवं सर्व कालमें अनन्त समय है कारण इस च्यार बोलोंमें काळ अनंतो है ।

(प्र) बहुवचनापेक्षा घणि अविलकामें समय संख्याते है असंख्याते है ? अनन्ते है ।

(उ) संख्याते नहीं स्यात् असंख्याते स्यात् अनन्ते समय है एवं ४७ वां बोल कालचक्र तक कहना शेष च्यार बोल (४८–४९–५०–५१) में संख्याते, असंख्याते समय नहीं किन्तु अनन्ते समय है ।

(प्र) एक श्वासोश्वासमें आविलका कितनि है ।

(उ) संख्याती है शेष नहीं एवं ४२ बोलतक स्यात संख्याती ४३–४४–४५–४६–४७ इस पांच बोलोंमें असंख्याती है शेष ४८–४९–५०–५१ वां बोलमें अनन्ती है एवं बहुवचनापेक्षा परन्तु ४२ बोलोंतक स्यात् संख्यती स्यात असंख्याती स्यात अनन्ती पांच बोलोंमें स्यात असंख्याती स्यात अनन्ती शेष च्यार बोलोंमें आविलका अनन्ती है ।

इसी माफीक एकेक बोल उत्तरोत्तर पृच्छा करनेमें एक वचनापेक्षा ४२ बालों तक संख्याते ५ बालोंमें असंख्याते ४ बालोंमें अनंते और बहुतवचनापेक्षा ४२ बोलो तक स्यात् संख्याते स्यात असंख्याते स्यात अनंते, पांच बोलोमें, स्यत असंख्याने स्यात् अनन्ते और च्यार बोलोंमें अनन्ते कहना । चरम प्रश्न ।

(प्र) भूतकालमें पुद्गल प्रवर्तन कितने है ।

नेसे फीरसे छदो० संयम दिया जाता है (२) तेवीसवें तीर्थकरोंका साधु चौवीसवें तीर्थकरोंके शासनमें आते है उसकों भी छदो० संयम दिया जाते है वह निरातिच्यार छदो० संयम है (३) परिहार विशुद्ध संयमके दो भेद है (१) निवृतमान जेसे नौ मनुष्य नौ नौ वर्षके हो दीक्षाले वीस वर्ष गुरुकुलवासे नौ पुर्वका ध्ययन कर विशेष गुण प्राप्तिके लिये गुरु आज्ञासे परिहार विशुद्ध संयमको स्वीकार करे। प्रथम छेमास तक च्यार मुनि तपश्चर्य करे च्यार मुनि तपस्वी मुनियोंकि व्यावच्च करे एक मुनि व्याख्यान वांचे दूसरे छ मासमें तपस्वी मुनि व्यावच्च करे व्यावच्चयवाले तपश्चर्य करे तीसरे छमासमें व्याख्यान वाला तपश्चर्यकरे सातमुनी उन्होंकि व्यावच्चकरे, एक मुनि व्याख्यान वांचे। तपश्चर्यका क्रम. उष्णकालमें एकान्तर शीतकालमें छट छट पारणा चतुर्मासामें [illegible] पारणा करे, एसे १८ मासतक तपश्चर्य करे। जिनकल्पको [illegible] करे अगर एसा नहोतों वापीस गुरुकुलवासाकों स्वीकार करे

(४) सुक्ष्म संपराय संयमके दो भेद है। (१) [illegible] उपशमश्रेणिसे गिरते हुवेके (२) विशुद्ध परिणाम [illegible] हुवेके (५) यथाख्यात संयमके दो भेद है (१) [illegible] (२) क्षिणवितरागी जिस्में क्षिणवितरागीके दो [illegible] स्त (२) केवली जिस्में केवलीका दोय भेद है [illegible] (१) अयोगी केवली। इति द्वारम्

(२) वेद —सामायिक सं० छदोपस्था० [illegible] वैदी भी होते है कारण नौ वां गुण [illegible] १ वेद क्षय होते है और उक्त दोनों [illegible]

(४) कल्पातित—आगम विहारी अतिश्य ज्ञानवाले महात्मा जो कल्पसे वितिरक्त अर्थात् भूत भविष्यके लाभालाभ देख कार्य करे इति । सामा० सं० में पूर्वोक्त पांचों कल्पपावे छदो० परिहार०में कल्प तीन पावे, स्थित कल्प, स्थिवर कल्प, जिन कल्प । सूक्ष्म० यथाख्य० में कल्पदोय पावे अस्थित कल्प और कल्पातित इतिद्वारम् ।

(५) चारित्र=सामा० छदो० में निर्गंथ च्यार होते है पुलाक बुकश प्रतिसेवन, कषायकुशील । परिहार० सुक्ष्म० में एक कषाय कुशील निर्गंथ होते है यथाख्यात संयममें निर्गंथ और स्नातक यह दोय निग्रन्थ होते है द्वारम् ।

(६) प्रति सेवना—सामा० छदो० मूलगुण (पांच महाव्रत) प्रति सेवी (दोष लगावे) उत्तर गुण (पंड विशद्धादि) प्रतिसेवीतथा अप्रति सेवी होते है द्वारम् ।

(७) ज्ञान—प्रथमके च्यार संयममें क्रम.सर च्यार ज्ञानकि भजना २–३–३–४ यथाख्यातमें पांच ज्ञानकि भजना ज्ञान पढ़ने अपेक्षा सामा० छदो० जघन्य अष्ट प्रवचन उ० १४ पूर्व पढे । परिहार० ज० नौवां पूर्वकि तीसरी आचार वस्तु उ० नौ पूर्व सम्पुर्ण, सुक्ष्म० यथाख्यात ज० अष्ट प्रवचन उ० १४ पूर्व तथा सुत्र वितिरक्त हो इतिद्वारम् ।

(८) तीर्थ—सामा० तीर्थमें हो, अतीर्थमें हो, तीर्थंकरोंके हो और प्रत्येक बुद्धियोंके होते है । छदो० परि० सुक्ष्म० तीर्थमें ही होते है यथाख्यात० सामायिक संयमवत् च्यारोंके होते है इतिद्वारम् ।

(१३) गतिद्वार यंत्रसे

संयमके नाम	गति		स्थिति	
	ज०	उ०	ज०	उ०
सामा० छदोप०	सौधर्म कल्प	अनुत्तर वै०	२ पल्यो०	३३ सागरो०
परिहार०	सौधर्म०	सहस्र	२ पल्यो०	१८ सागरो०
सुक्षम०	अनुत्तर वै०	अनुत्तर वै०	३१ साग०	३३ सा०
यथाख्या०	अनु०	अनु०	३१ सा०	३३ सा०

देवतावोंमें इन्द्र, सामानिक, तावत्रीसका, लोकपाल, और अहमेंन्द्र यह पाच पद्वि है। सामा० छदो आराधि होतों पांचोसे एक पद्विवाला देव हो परिहार विशुद्ध प्रथमकि च्यार पद्विसे एक पद्वि घर हों। सुक्ष० यथा० अहंमेंन्द्रि पद्विघर हों। जघन्य विराधि होतों च्यार प्रकारके देवोंसे देव होवें। उत्कृष्ट विराधि होतों संसारमडल। इतिद्वारम्।

(१४) संयमके स्थान—सामा० छेदो० परि० इनतीनों संयमके स्थान असंख्याते असंख्याते है। सुक्षम० अन्तर महुर्तके समय परिमाण असंख्याते स्थान है। यथाख्यानके संयमका स्थान एक ही है। जिस्की अल्पाबहुत्व।

(१) स्तोक यथाख्यान सं०के संयम स्थान।

(२) सुक्ष्म०के संयमस्थान असंख्यातगुने।

(३) परिहारके „ „

(४) सामा० छेदो० सं०स्थ० तुल्य „

स्म० संज्वलनके लोभमें और यथाख्यात० उपशान्त कषाय और
ण कषायमें भी होता है ।

(१९) लेश्या—सामा० छेदो० में छओं लेश्या, परिहार०
ों पद्म शुक्ल तीनलेश्या, सूक्ष्म० एक शुक्ल, यथाख्यात० एक
ल तथा अलेशी भी होते है ।

(२०) परिणाम—सामा० छेदो० परिहार० में हियमान० वृद्ध-
न और अवस्थित यह तीनों परिणाम होते है । जिस्में हियमान
मानकि स्थिति ज० एक समय उ० अन्तर महुर्त और अव-
तकि ज० एक समय उ० सात समय० । सूक्ष्म० परिणाम दोय
मान वृद्धमान कारण श्रेणि चढते या पडते जीव वहां रहेते
उन्होंकि स्थिति ज० उ० अन्तर महुर्तकि है । यथाख्यात०
णाम वृद्धमान, अवस्थित जिस्में वृद्धमानकि स्थिति ज० उ०
र महुर्त और अवस्थितकि ज० एक समय उ० देशोनाक्रोड
(केवलीकि अपेक्षा) द्वारम् ।

(२१) बन्ध—सामा० छेदो० परि० सात तथा आठ कर्म
सात बन्धे तो आयुष्य नहीं बन्धे । सूक्ष्म० आयुष्य० मोह-
र्म वर्जके छे कर्म बन्धे । यथाख्यात० एक साता वेदनिय
तथा अबन्ध ।

(२२) वेदे—प्रथमके च्यार संयम आठों कर्म वेदे। यथाख्यात०
(मोहनिय वर्जके) कर्म वेदे तथा च्यार अघातीया कर्म वेदे ।

(२३ उदिरणा—सामा० छेदो० परि० ७-८-६ कर्म